● पढ़ो, समझो और बताओ :

११. प्रगति

प्रस्तुत एकांकी के माध्यम से लेखक ने विद्यार्थियों के भविष्य निर्माण में उनकी अभिरुचि एवं रुझान को विशेष महत्त्व प्रदान किया है ।

स्वयं अध्ययन

किसी अपठित कविता का पाठ करो और उसके आधार पर टिप्पणी लिखो ।

पात्र परिचय –

समीक्षा–९ साल की बेटी, ज्ञानेश–१२ साल का बेटा, माँ, पिता जी, बुआ जी, दादी माँ, मामा जी, प्रधानाध्यापक ।

प्रथम दृश्य

[दो बच्चे–समीक्षा और ज्ञानेश, समीक्षा चौथी कक्षा में और ज्ञानेश सातवीं में पढ़ रहा है । परदा खुलते ही एक मध्यम वर्ग के परिवार का दृश्य उपस्थित होता है । माँ अपने घरेलू कार्य में व्यस्त है । समीक्षा का रोते हुए आगमन]

बुआ जी : क्या बात हुई ? कौन–सा आसमान टूट पड़ा जो रोए चली जा रही है ?

समीक्षा : ज्ञानेश ने मुझे मारा ।

माँ : यह तो मैं जानती हूँ, एक दिन की छुट्टी क्या आती है मेरी तो शामत आ जाती है । सुबह से तुम्हारी तू–तू, मैं–मैं शुरू हुई है । एक पल का चैन नहीं । क्यों मारा ज्ञानेश ने ?

समीक्षा : पापा ने मुझे बैडमिंटन का रैकेट लाकर दिया था । मैंने रैकट उसे नहीं दिया तो लगा मारने ।

बुआ जी : और तूने मार खा ली ?

समीक्षा : मैं उसे मारूँगी तो आप कहेंगी कि तुम छोटी हो, वह बड़ा है, बड़ों पर हाथ नहीं उठाना चाहिए । वरना मैं उसे वह मजा चखाती कि याद रखता ।

दादी माँ : **(हँसकर)** अच्छा–अच्छा । रो मत रानी बेटी, मैं अभी उसे बुलाकर डाँटती हूँ । ज्ञानेश–ओ–ज्ञानेश !

ज्ञानेश : **(डरा–डरा, धीरे–धीरे आता है ।)** क्या है माँ ?

माँ : मैंने तुझे हजार बार कहा है कि छोटी बहन को मत सताया करो । क्यों मारा तुमने समीक्षा को ?

ज्ञानेश : पहले इसने अपना रैकेट मुझे नहीं दिया और मैं छीनने लगा तो इसने मुझे जोर से धक्का दिया ।

माँ : पर रैकेट तो इसका है न, तुमने क्यों छीना ?

ज्ञानेश : पापा ने कहा था कि दोनों इससे खेलना । मुझे तो अभी खेलना था ।

माँ : ठीक है, कल मैं तुझे अलग रैकेट लाकर दूँगी । आइंदा छोटी बहन को मारना मत, समझे ।

ज्ञानेश : मुझे अभी पैसे दे दो मम्मी, मैं बाजार से नई रैकेट लेकर आऊँगा ।

माँ : देखो बेटे, जिद नहीं किया करते । **(प्यार से)** मेरा अच्छा बेटा, माँ का कहना मानेगा न !

ज्ञानेश : समीक्षा चल, हम दोनों खेलते हैं ।

समीक्षा : हाँ, चलो । **(दोनों खेलने के लिए भाग जाते हैं ।)**

माँ : चलो, थोड़ी देर तो पिंड छूटा ।

❑ उचित हाव–भाव, आरोह–अवरोह के साथ इस पाठ के किसी एक बड़े संवाद का आदर्श वाचन करें । विद्यार्थियों से मुखर वाचन कराएँ । एकांकी का कक्षा में नाट्यवाचन कराएँ । प्रश्नोत्तर एवं चर्चा के माध्यम से पाठ के मुद्दों को स्पष्ट करें ।

जरा सोचो ..... बताओ ।

यदि सभी बच्चे एक-दूसरे से झगड़ना बंद कर दें तो ...

दूसरा दृश्य

(घर में पति-पत्नी बातचीत करते हुए)

माँ : आप तो ऑफिस चले जाते हैं और मैं इन दोनों से तंग आ जाती हूँ । समीक्षा तो थोड़ा कहना मान भी लेती है पर ज्ञानेश तो सारा दिन तोड़-फोड़ में लगा रहता है ।

पिता जी : समीक्षा शांत स्वभाव की है । वह जिज्ञासु और खोजी वृत्ति की है पर ज्ञानेश थोड़ा गरम मिजाज का है ।

माँ : ज्ञानेश तो हर समय कुछ-न-कुछ करता रहता है । कल बैठे-बैठे टी. वी. का रिमोट खोल दिया ।

पिता जी : अच्छा ! लेकिन क्यों ?

माँ : पूछा तो बताया, रिमोट कैसे चलता है, देखना चाहता हूँ ।

पिता जी : अरे, समझ लो कि उसमें जिज्ञासा कूट-कूट कर भरी हुई है । बड़ा चुस्त और चंचल वृत्ति का है ।

[मामा जी का प्रवेश]

मामा जी : नमस्कार ! क्या चल रहा है ?

पिता जी : आइए, बहुत दिनों के बाद याद आई अपनी बहन की ।

मामा जी : मैं ऑफिस के काम से एक सप्ताह के लिए बाहर गया था, दीदी ! बच्चे दिखाई नहीं दे रहे हैं ?

माँ : अरे, यहीं कहीं खेल रहे होंगे । आप लोग बैठिए, मैं चाय लाती हूँ ।

(चाय लाने अंदर जाती हैं ।)

पिता जी : आपकी बहन जी ज्ञानेश से परेशान हैं, थोड़ा नटखट है न ।

मामा जी : वैसे अपना ज्ञानेश है बड़ा चुस्त ! पचासों बातें एक साथ पूछता है ।

बुआ जी : कई बार समीक्षा विज्ञान की बातें पूछने लगती है । मुझे विज्ञान की ज्यादा जानकारी नहीं है ।

मामा जी : विज्ञान की ढेर सारी पुस्तकें मिलती हैं । इंटरनेट पर भी पढ़ना चाहिए ।

माँ : पढ़ना तो पड़ेगा वरना ये बच्चे पता नहीं कब क्या पूछ बैठें ?

[समीक्षा और ज्ञानेश का प्रवेश]

ज्ञानेश, समीक्षा : प्रणाम मामा जी !

मामा जी : खुश रहो बच्चो, कैसे हो ?

समीक्षा : अच्छी हूँ । मामा जी मालूम है । मामी जी से बात हुई तो उन्होंने बताया कि अनन्य भैया डॉक्टर बनेंगे ।

मामा जी : अच्छा ! ठीक है डॉक्टर बनेगा तो हम सब उससे दवा लेंगे ।

❑ अंतरजाल की सहायता से सैनिक विद्‌यालय में प्रवेश के नियमों की जानकारी प्राप्त करने के लिए कहें । वे बड़े होकर क्या बनना चाहते हैं, बताने के लिए कहें । पाठ में आए कर्ता, कर्म, करण के चिह्नों के पहले आए शब्दों की सूची बनवाएँ ।

मेरी कलम से

पाठ्यपुस्तक की किन्हीं चार-पाँच पंक्तियों का मराठी में अनुवाद करो एवं अंग्रेजी में लिप्यंतरण करो ।

ज्ञानेश : दवा तो बीमार लेते हैं । आप बीमार थोड़े हैं ? **(सब हँसते हैं, माँ चाय लेकर आती हैं ।)**

माँ : इससे पूरे दिन बात करते रहो यह थकेगा नहीं ।

दादी जी : ज्ञानेश ! मामा जी को बताओ, तुम बड़े होकर क्या बनोगे ?

ज्ञानेश : बड़ा होकर ? बड़ा होकर मैं-मैं सेना में कप्तान बनूँगा ।

समीक्षा : मामा जी बड़ी होकर मैं वैज्ञानिक बनूँगी ।

मामा जी : शाबाश ! ज्ञानेश तुझे कप्तान और समीक्षा को वैज्ञानिक बनाएँगे । **[बच्चे अंदर जाते हैं ।]**

पिता जी : **(पत्नी से)** सुन लिया आपके ज्ञानेश जी तो सेना में कप्तान बनेंगे और बिटिया वैज्ञानिक होगी ।

मामा जी : यह सेना में न जाने कब कप्तान बनेगा, घर में तो शैतान बना हुआ है ।

मामा जी : प्रधानाध्यापक से पता लगाना चाहिए कि ये बच्चे कौन-से कौन-से क्षेत्र में सफल हो सकते हैं ।

पिता जी : ठीक है, आपकी राय दुरुस्त है । एक दिन बच्चों के स्कूल जाकर उनसे बात करूँगा ।

मामा जी : जरूर कीजिए, मुझे भी बताइए । अच्छा नमस्कार । मैं चलता हूँ ।

तीसरा दृश्य

(प्रधानाध्यापक का कक्ष, माँ और पिता जी उनके कक्ष में जाते हैं ।)

माँ-पिता जी : नमस्कार !

प्रधानाध्यापक : नमस्कार ! नमस्कार !! बैठिए, कहिए कैसे आना हुआ ?

पिता जी : आज समय निकाला । सोचा स्कूल जाकर बच्चों की प्रगति के बारे में पूछ लूँ ।

प्रधानाध्यापक : हमें अभिभावकों के सहयोग की बहुत आवश्यकता होती है । आप लोगों की सहायता से विद्‌यालय की कई गतिविधियों को सुचारु ढंग से चला सकते हैं ।

माँ : सर ! ज्ञानेश और समीक्षा की विशेष रुचि किन विषयों में हैं ?

प्रधानाध्यापक : ज्ञानेश खेल-कूद अन्य गतिविधियों में बहुत तेज है । नेतृत्व के अच्छे गुण उसमें हैं । समीक्षा की रुचि तो विज्ञान में बहुत अधिक है ।

पिता जी : इसी विषय में मुझे निर्णय लेना है । इनके लिए कौन-सा क्षेत्र ठीक रहेगा ? आपके मार्गदर्शन की आवश्यकता है ।

प्रधानाध्यापक : **(चार्ट ध्यान से देखते हैं ।)** समीक्षा को विज्ञान में आगे बढ़ने देना ठीक होगा ।

पिता जी : क्या ज्ञानेश को अगले वर्ष सैनिक विद्‌यालय में भर्ती करना उचित होगा ?

माँ : इसके लिए क्या-क्या करना पड़ेगा ?

प्रधानाध्यापक : मैं आपको जानकारी दे दूँगा । आप निश्चिंत रहिए ।

पिता जी : मैं आपका आभारी रहूँगा ।

प्रधानाध्यापक : आभार किस बात का ? यह मेरा कर्तव्य है । मेरे स्कूल में पढ़ने वाला बच्चा प्रगति करे इससे ज्यादा खुशी मेरे लिए और क्या हो सकती है ?

[माँ-पिता जी, प्रधानाध्यापक जी के कक्ष से निकलते हैं । परदा बंद होता है ।]

❑ संवाद के अव्ययों को ढूँढ़कर लिखवाएँ । अव्ययों का वर्गीकरण कराके उनकी सूची बनवाएँ । विविध व्यवसायों के संबंध में उनसे चर्चा कराएँ । विद्‌यार्थियों की अभिरुचि/रुझान के बारे में समुपदेशक से मार्गदर्शन कराएँ ।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

शामत आना = मुसीबत आना

सुचारु = सुंदर

मुहावरे

आसमान टूट पड़ना = संकट आना

पिंड छूटना = मुक्ति पाना

नाक में दम करना = परेशान करना

सुनो तो जरा

बालविज्ञान परिषद संबंधी जानकारी सुनो और सुनाओ ।

बताओ तो सही

एक शब्द से अनेक शब्द बनाने की पहेलियाँ बूझो/बुझाओ ।
जैसे– अहमदनगर= अहमद, नगर, मदन, अहम ।

वाचन जगत से

किसी कहानी के बारे में स्व मत लिखो ।

विचार मंथन

।। सीमा की रक्षा, देशवासियों की सुरक्षा ।।

अध्ययन कौशल

अंतरजाल/पुस्तक से जानकारी पढ़ो और टिप्पणी लिखो :

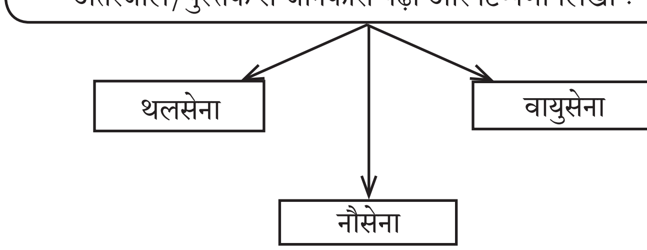

खोजबीन

भारत के प्रसिद्‌ध शहरों के प्राचीन नाम ढूँढ़ो और बताओ ।

✲ **किसने किससे कहा है ?**

(क) ''वरना मैं उसे मजा चखाती ।''

(ख) ''आइए, बहुत दिनों के बाद याद आई अपनी बहन की ।''

(ग) ''कई बार समीक्षा विज्ञान की बातें पूछने लगती है ।''

(घ) ''मैं आपको जानकारी दे दूँगा ।''

(च) ''जरूर कीजिए, मुझे भी बताइए ।''

(छ) ''इनके लिए कौन-सा क्षेत्र ठीक रहेगा ?''

सदैव ध्यान में रखो

विद्यार्थियों के भविष्य की नींव विद्यालय में डाली जाती है ।

भाषा की ओर

परिच्छेद पढ़ो,कारक पहचानकर उनकी विभक्तियाँ और प्रत्येक कारक का एक-एक वाक्य लिखो :

मेरा घर सड़क के किनारे है । एक दिन मिनी मेरे कमरे में खेल रही थी । अचानक वह खेल छोड़कर खिड़की के पास दौड़ी गई और बड़े जोर से चिल्लाने लगी, ''काबुलीवाले, ओ काबुलीवाले !''

कंधे पर मेवों की झोली लटकाए, हाथ में अंगूर की पिटारी लिए लंबा-सा काबुलीवाला धीमी चाल से सड़क पर जा रहा था । जैसे ही वह मकान की ओर आने लगा, मिनी भीतर भाग गई । उसे डर लगा कि कहीं वह उसे पकड़ न ले जाए । उसके मन में बात बैठ गई थी कि काबुलीवाले की झोली के अंदर तलाश करने पर उस जैसे और भी दो-चार बच्चे मिल जाएँगे । काबुली ने मुसकराते हुए मुझे सलाम किया । मैंने उससे कुछ सौदा खरीदा फिर वह बोला, ''बाबू साहब, आप की लड़की कहाँ गई ?''

मैंने मिनी के मन से डर दूर करने के लिए उसे बुलवा लिया । काबुलीवाला ने झोली से किशमिश और बादाम निकालकर मिनी को देना चाहा पर उसने कुछ न लिया । डरकर वह मेरे घुटनों से चिपट गई । कुछ दिन बाद, किसी जरूरी काम से मैं बाहर जा रहा था देखा कि मिनी काबुलीवाले से खूब बातें कर रही है । काबुलीवाला मुसकराता हुआ सुन रहा है ।

कारक	कारक की विभक्ति	वाक्य
(१) -----------	-----------	--------------------------
(२) -----------	-----------	--------------------------
(३) -----------	-----------	--------------------------
(४) -----------	-----------	--------------------------
(५) -----------	-----------	--------------------------
(६) -----------	-----------	--------------------------
(७) -----------	-----------	--------------------------

● **सुनो, समझो और दोहराओ :**

१२. जादुई अँगूठी

इस कहानी के माध्यम से कहानीकार ने अंधविश्वास की निरर्थकता एवं मेहनत की महत्ता को दर्शाया है ।

जरा सोचो ..... बताओ

अगर तुम 'शक्तिमान' बन जाओ तो ...... ।

चंदन एक खिलाड़ी और मस्त-मौला किस्म का लड़का था । पूरे-पूरे दिन संतरंगी तितलियों के पीछे -पीछे भागता रहता । कभी किसी बाग में चोरी से घुस जाता और रखवाले की आँख बचाकर फूल चुरा लाता । इस तरह के कामों में उसे बड़ा आनंद आता । पिता जी उसे पढ़ने के लिए कह-कहकर थक जाते पर उसके कान पर जूँ तक नहीं रेंगती ।

उसका दिमाग नित नई शैतानी करने के तरीके सोचता रहता । पढ़ाई में उसका मन बिलकुल नहीं लगता था । स्कूल में रोज उसे डाँट सुननी पड़ती । उसी की कक्षा में शेखर भी पढ़ता था । वह एक तेज, मेधावी छात्र था । सभी अध्यापक-अध्यापिकाएँ उसकी प्रशंसा करते थे ।

शेखर सदैव बाएँ हाथ की अँगुली में एक लाल नगवाली अँगूठी पहने रहता था । चंदन के दिल में यह विश्वास बैठ गया था कि वह कोई जादुई अँगूठी है जिसके कारण शेखर सदैव पढ़ाई में आगे रहता है ।

चंदन दिन-रात यही मनसूबे बनाता कि किसी तरह उसे भी कोई ऐसी ही जादुई अँगूठी मिल जाए तो वह शेखर को हर चीज में पिछाड़ दे । स्कूल की फुटबॉल टीम का चयन होने वाला था । फुटबॉल चंदन का प्रिय खेल था । अतः उसकी चिंता बढ़ती जा रही थी । अंत में उसने शेखर से यह पता लगाने का फैसला किया कि उसे वह जादुई अँगूठी कहाँ से मिली ?

अगले ही दिन चंदन, शेखर के पास जाकर बहुत प्यार से बोला ''शेखर, तुम्हें यह जादुई अँगूठी कहाँ से मिली ? मुझे बताओ जरा ।''

शेखर हँसता हुआ बोला, ''अरे, यह साधारण अँगूठी है । जादुई अँगूठी तो बस किस्से-कहानियों में होती है, तुम किस चक्कर में पड़े हो ?''

शेखर के बहुत समझाने पर भी चंदन को विश्वास नहीं हुआ । उसे लगा, शेखर उसे बताना नहीं चाहता है । उन दोनों की बात पास खड़ा पवन ध्यान से सुन रहा था । उसे चंदन को मूर्ख बनाने का अच्छा मौका मिला । चंदन उसे कई बार परेशान कर चुका था । वह पास आकर बोला, ''चंदन, मैं एक बाबा जी को जानता हूँ, तुम चाहो तो मैं तुम्हें उनसे मिलवा सकता हूँ।'' चंदन

❑ उचित आरोह-अवरोह के साथ कहानी का मुखर वाचन करवाएँ । विद्यार्थियों को कहानी के आशय से संबंधित प्रश्न पूछने के लिए प्रेरित करें । कहानी का कौन-सा पात्र और घटना अच्छी लगी, क्यों ? पूछें । कक्षा में कथा-कथन के कार्यक्रम का आयोजन करें ।

मेरी कलम से

'जंगल का पत्र मनुष्य के नाम' इस विषय पर पत्र लिखो ।

की आँखें खुशी से चमक उठीं परंतु शेखर ने पूछा, ''अगर तुम जानते हो तो तुमने अपने लिए क्यों नहीं खरीदी जादुई अँगूठी ?''

पवन जल्दी से बोला, ''वह अँगूठी महँगी है । मेरे पास इतने पैसे नहीं हैं । अगर चंदन के पास हैं तो उसे लेने दो, तुम्हें क्या परेशानी है ?''

शेखर के लाख समझाने पर भी चंदन पवन के साथ चल दिया और घर जाकर अपने गुल्लक के सारे पैसे निकाल लाया । पूरे सौ रुपये थे । उसे लेकर वे सड़क के किनारे बैठे एक आदमी के पास पहुँचे । वह एक बड़े कागज के टुकड़े पर अनेक नगीने और अँगूठियाँ रखे हुए था । दोनों उसके पास जाकर अँगूठी देखने लगे ।

पवन ने एक अँगूठी उठाकर दिखाई, ''देखो ये कितनी चमक रही है, यही ले लो, बहुत सुंदर है ।''

चंदन सिर हिलाते बोला, ''यह जादुई नहीं है ।''

''तुम्हें कैसे पता ?''

''पवन, इनके नगीनों के रंग देख रहे हो, कोई भी लाल नहीं है ।''

अँगूठीवाला आदमी ध्यान से दोनों की बातें सुन रहा था । बोला, ''तुम्हें क्या जादुई अँगूठी चाहिए ?''

''हाँ'' दोनों एक साथ बोल उठे । अपने झोले से उसने एक गुलाबी नगीने की अँगूठी निकाली और बोला, ''यह है जादुई अँगूठी । रंग से कुछ नहीं होता लेकिन बेटा, यह पूरे दो सौ रुपये की है ।''

''मेरे पास तो केवल सौ रुपये ही हैं ।'' चंदन सिर झुका कर बोला । वह बहुत निराश हो गया था ।

उसपर दया दिखाते हुए वह आदमी बोला, ''ठीक है, तुम्हें सौ रुपये में ही दे देता हूँ, ले जाओ ।''

चंदन की खुशी का कोई ठिकाना नहीं था । अगले दिन स्कूल की फुटबॉल टीम का चयन होना था । चंदन खुशी-खुशी अपनी अँगूठी पहनकर अपनी साइकिल पर सवार होकर स्कूल की ओर चल दिया । अपनी धुन में वही टीम का कैप्टन बनने का सपना देखता चला जा रहा था कि उसकी साइकिल एक पत्थर पर चढ़ गई और वह साइकिल समेत गिर पड़ा । उसे काफी चोट आई थी । एक राहगीर उसे उठाकर अस्पताल ले गया । उसके एक पैर पर प्लास्टर चढ़ाना पड़ा । वह आश्चर्य चकित-सा अपनी जादुई अँगूठी को देख रहा था । कैप्टन बनना तो दूर की बात, वह तो चयन प्रक्रिया में भी शामिल नहीं हो सका था ।

शेखर उसे देखने आया । चंदन ने उससे विनती की कि वह उसे सही जादुई अँगूठी का पता बता दे । शेखर उसे बहुत देर तक समझाता रहा । शेखर जैसे ही उसके कमरे से बाहर निकला, चंदन के पिता ने उससे पूछा कि यह जादुई अँगूठी का क्या किस्सा है ? पूरी बात जानकर उन्होंने एक योजना बनाई । थोड़ी देर बाद चंदन की माँ की ओर देखकर बोले, ''कई दिनों से सोच रहा हूँ कि चंदन के लिए जादुई अँगूठी खरीद दूँ ।''

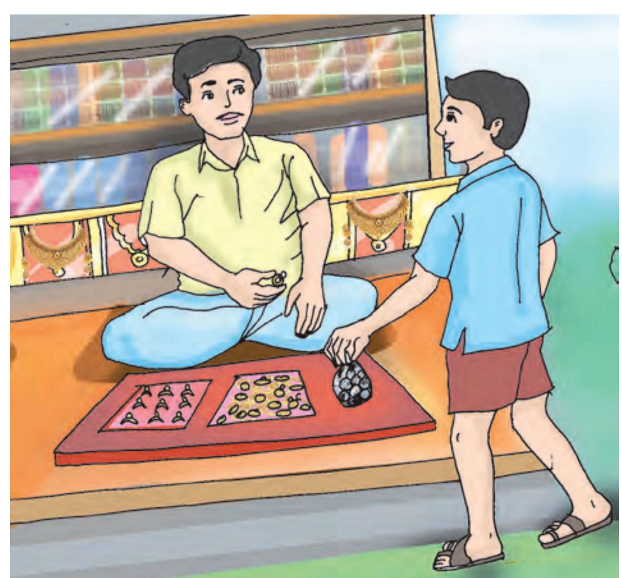

❑ अंधविश्वास फैलाने वाली बातों और वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर चर्चा कराएँ । विद्‌यार्थियों को कहानी के केंद्रीय विचार का लेखन करने के लिए प्रेरित करें । उत्तर प्राप्त करने के लिए प्रश्नों की विविधता को ध्यान में रखकर इस कहानी से पाँच प्रश्नों की निर्मिति कराएँ ।

खोजबीन

वर्षाजल का संग्रह करने हेतु चलाई जाने वाली सरकारी योजनाओं संबंधी जानकारी प्राप्त करो और लिखो ।

खुशी से चहककर चंदन बोला, ''क्या आप सच कह रहे हैं?'' माँ ने बात बीच में ही काटी, ''अरे ! वह तो बहुत महँगी आती है, एक हजार रुपये की है ।''

''पैसे की कोई बात नहीं है, अँगूठी तो मैं खरीद दूँगा लेकिन समस्या उसे पहनने की शर्त है ।''

चंदन जल्दी से बोल पड़ा , ''पिता जी जादुई अँगूठी पहनने की हर शर्त मैं मानने को तैयार हूँ ।''

''बेटा, उस अँगूठी को पहनने वाले को सभी काम समय से करने पड़ते हैं । हमेशा सच बोलना पड़ता है । खेलने का समय, पढ़ने का समय सब कुछ नियम से बँध जाता है ।'' पता नहीं, इतना कड़ा नियम तुम पालन कर पाओगे या नहीं । ऐसा न करने पर उस अँगूठी की जादुई ताकत कम हो जाती है ।''

''मैं वादा करता हूँ पिता जी । आपका विश्वास नहीं तोड़ूँगा ।'' पिता जी ने उसे अँगूठी ला दी । लाल रंग की चमचमाती हुई अँगूठी पाकर चंदन की खुशी का ठिकाना नहीं था परंतु उसे अपना वादा भी याद रहा । उसने पढ़ना शुरू किया । उसका सब काम पूरा हो गया । साथ ही उसका पढ़ाई में मन भी लगने लगा ।

वह मुग्ध भाव से अपनी जादुई अँगूठी को देखता और अपने अंदर आ रहे परिवर्तन को महसूस करता । उसे लगता वह धीरे-धीरे शेखर जैसा होता जा रहा है । उसकी कमियाँ दूर भाग रही हैं । धीरे-धीरे वह पुनः स्कूल जाने लगा । अब वह कक्षा में प्रश्नों के उत्तर देता, अध्यापकगण उसकी प्रशंसा करते । शेखर के प्रति उसके मन का मैल धुल चुका था ।

आज उसका परीक्षाफल निकला था । कक्षा में हमेशा की तरह शेखर प्रथम आया था परंतु द्‍वितीय स्थान पर अपना नाम सुन कर चंदन की आँखों से खुशी के आँसू निकल पड़े । हमेशा किसी तरह से पास होने वाला वह कक्षा में पोजीशन ले आएगा, कौन कल्पना कर सकता था ?

खुशी से उछलता हुआ चंदन घर पहुँचा तो उसके माता-पिता बेसब्री से उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे । अपना परीक्षाफल पिता जी को देकर चंदन बोला, ''पिता जी यह देखिए इस जादुई अँगूठी का कमाल । आपके रुपये बरबाद नहीं गए । मैं कक्षा में द्‍वितीय आया हूँ ।''

पिता ने उठकर उसे गले लगा लिया और बोले, ''बेटा, जादू इस अँगूठी में नहीं था । जादू तो था तेरी मेहनत में । तुम्हारी मेहनत का जादू ही आज रंग लाया है ।'' ''क्या ?'' आश्चर्य से चंदन बोला ।

तब तक शेखर वहाँ आ गया था । बोला, ''हाँ चंदन, यह अँगूठी तो सिर्फ एक रुपये की है । तुम्हारे पिता जी के कहने पर मैंने ही इसे ला कर दी थी ।''

अब चंदन को सारी बात समझ में आ गई थी । उसका आत्मविश्वास जग गया था । मुस्कराकर बोला, ''पिता जी आपने तो मुझे जादुई अँगूठी के बजाय मेहनत का जादुई खजाना ही दे दिया ।''

चारों के चेहरे पर खुशी की मुसकान खिल उठी ।

❑ कहानी में आए उपसर्ग एवं प्रत्ययवाले शब्दों को ढुँढ़वाकर उनका वर्गीकरण कराएँ । पाठ में आए विराम चिह्नों के नाम बताने के लिए प्रेरित करें । अंधविश्वास निर्मूलन संबंधी संवाद प्रस्तुत करने के लिए कहें । पास-पड़ोस से अंधविश्वास दूर करने के लिए प्रेरित करें ।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

मेधावी = बुद्धिमान

मनसूबे = युक्ति, विचार, योजना

मुग्ध = प्रसन्न

मुहावरे

कान पर जूँ तक न रेंगना = कुछ असर न होना

खुशी का ठिकाना न होना = अत्यधिक प्रसन्न होना

स्वयं अध्ययन

तुम्हें कौन-से खेल पसंद हैं ? उनके बारे में दिए गए मुद्दों के आधार पर विस्तारपूर्वक चर्चा करो :

- नाम
- खिलाड़ियों की संख्या
- खेल का मैदान
- खेल की विधि

विचार मंथन

।। बिना बिचारे जो करे, सो पाछे पछताय ।।

सुनो तो जरा

इन शब्दों का प्रयोग करते हुए नई कहानी बनाकर सुनाओ :

- गिलास
- सिक्के
- बुढ़िया
- कलाकार

बताओ तो सही

किसी अंतरशालेय स्पर्धा के उद्‌घाटन समारोह का सूत्र संचालन कैसे करोगे ?

वाचन जगत से

निम्न व्यक्तियों की सफलता संबंधी जानकारी पढ़ो :

- शिक्षाविद
- खिलाड़ी
- कलाकार

अध्ययन कौशल

हिंदी-अंग्रेजी मुहावरों का द्विभाषी लघुकोश बनाओ तथा अपने लेखन में प्रयोग करो ।

जैसे - जैसे को तैसा = Tit for tat.

※ निम्न वर्णन किनका हैं, लिखो :

(क) मेधावी छात्र = ---------

(ख) साइकिल पर सवार होने वाला = ---------

(ग) चंदन को मूर्ख बनाने वाला = ---------

(घ) चमचमाती अँगूठी लाने वाले = ---------

(च) बेसब्री से प्रतीक्षा करने वाले = ---------------

(छ) परीक्षा में द्विवितिय स्थान पाने वाला = ------------

सदैव ध्यान में रखो

जादू केवल मनोरंजन का साधन है ।

※ शब्द पहेली हल करो :

१		२				३		४
				५				
६			७			८		
			९	१०				
११		१२					१३	
						१४		
१५		१६						
		१७			१८		१९	
२०				२१				

बाएँ से दाएँ : १. जुगाली करना (४ अक्षर), ३. उगना (३), ५ अनेक प्रकार के (३), ६. छोटी (२), ८. भारत का राष्ट्रध्वज (३), ९. जन्मभूमि (३), १२. खेती करने वाला (३), १४. चुप रहना (२), १५. गौरव (३), १७. आकाश (२), २०. विस्तार (३), १७. आकाश १८. प्रकाश देने वाला एक साधन (४), २०. विस्तार (३), २१. खोपड़ी (२) ।

ऊपर से नीचे : १. हवा (३ अक्षर), २. देश (२), ३. प्रगति (३), ४. प्रशंसा का गीत (४), ७. व्यवसाय करने वाला (४), १०. शरीर (२), ११. रंगहीन (३), १३. जानकारी (२), १४. ऋतु (३), १६. मनुष्य (३), १८ भारत का राष्ट्रीय पक्षी (२), १९. बालक (२) ।

भाषा की ओर

निम्न शब्दों के युग्म ढूँढ़ो तथा इनका प्रयोग करते हुए उचित वाक्य कॉपी में लिखो :

चहल – पहल

.... – पड़ोस

टेढ़ा – ......

जीवन – ....

चढ़ाव – ....

चाल – ....

.... – भाटा

लेन – ....

● **सुनो, पढ़ो और गाओ :**

१३. मेरे देश के लाल

– बालकवि बैरागी

जन्म : १० फरवरी १९३१, रामपुर, मंदसौर (म.प्र.) **रचनाएँ :** सूर्य उवाच, हैं करोड़ों सूर्य, दीपनिष्ठा को जगाओ, प्रतिनिधि रचनाएँ, बाल कविताएँ आदि **परिचय :** सांसद, पत्रकार, शिक्षाविद, हिंदी कवि और फिल्मी गीतकार के रूप में बैरागी जी ने बहुत ख्याति अर्जित की है।

प्रस्तुत गीत के माध्यम से कवि ने सेनानियों की आन-बान-शान एवं हमारे स्वाभिमान को दर्शाया है।

बताओ तो सही

अपने राष्ट्रध्वज की जानकारी बताओ। जैसे- राष्ट्रध्वज का आकार, रंगों का क्रम, चक्र की विशेषताएँ आदि।

पराधीनता को जहाँ समझा श्राप महान
कण-कण के खातिर जहाँ हुए कोटि बलिदान
मरना पर झुकना नहीं, मिला जिसे वरदान
सुनो-सुनो उस देश की शूर-वीर संतान

आन-मान अभिमान की धरती पैदा करती दीवाने
मेरे देश के लाल हठीले शीश झुकाना क्या जानें।

दूध-दही की नदियाँ जिसके आँचल में कलकल करतीं
हीरा, पन्ना, माणिक से है पटी जहाँ की शुभ धरती
हल की नोकें जिस धरती की मोती से माँगे भरतीं
उच्च हिमालय के शिखरों पर जिसकी ऊँची ध्वजा फहरती

रखवाले ऐसी धरती के हाथ बढ़ाना क्या जानें
मेरे देश के लाल हठीले शीश झुकाना क्या जानें।

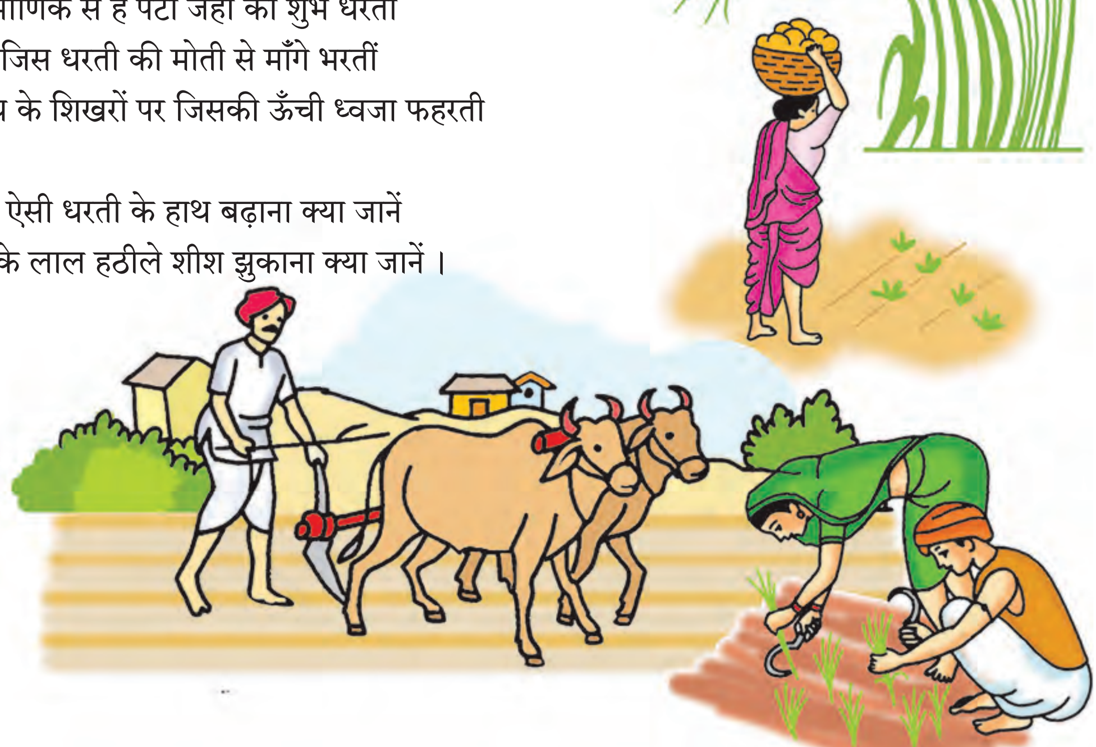

❑ उचित हाव-भाव, लय-ताल के साथ कविता का पाठ करें। उचित हाव-भाव के साथ विद्यार्थियों से सामूहिक, गुट में एवं एकल पाठ कराएँ। प्रश्नोत्तर एवं चर्चा के माध्यम से कविता में आए भावों एवं विचारों को स्पष्ट कराएँ।

सुनो तो जरा

आकाशवाणी/सी. डी./दूरदर्शन पर 'ए मेरे वतन के लोगों' गीत सुनो ।

आजादी अधिकार सभी का जहाँ बोलते सेनानी
विश्व शांति के गीत सुनाती जहाँ चुनरिया ये धानी
मेघ साँवले बरसाते हैं जहाँ अहिंसा का पानी
अपनी माँगे पोंछ डालती हँसते-हँसते कल्याणी

ऐसी भारत माँ के बेटे मान गँवाना क्या जानें
मेरे देश के लाल हठीले शीश झुकाना क्या जानें ।

जहाँ पढ़ाया जाता केवल माँ की खातिर मर जाना
जहाँ सिखाया जाता केवल करके अपना वचन निभाना
जियो शान से, मरो शान, से, जहाँ का है कौमी गाना
बच्चा-बच्चा पहने रहता जहाँ शहीदों का बाना

उस धरती के अमर सिपाही पीठ दिखाना क्या जानें
मेरे देश के लाल हठीले शीश झुकाना क्या जानें ।

- स्वाधीनता और पराधीनता पर चर्चा करें । 'पराधीनता एक अभिशाप है' इस विषय पर दस से पंद्रह वाक्य लिखवाएँ । कविता में 'मोती से माँगे भरती' माँ के खातिर मर जाना' में 'मोती' और 'माँ' शब्द किन के संदर्भ में आए हैं, चर्चा कराएँ ।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द
हठीले = हठी, जिद्दी
कौमी = राष्ट्रीय
चुनरिया = चूनरी
बाना = पहनावा, पोशाक

विचार मंथन

।। पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं ।।

मेरी कलम से

'मेरा देश' इस विषय पर चार पंक्तियों की कविता लिखो ।

जरा सोचो ..... बताओ

यदि तुम्हें २६ जनवरी के 'राष्ट्रीय संचलन' में हिस्सा लेने का अवसर प्राप्त हो जाए तो ...

स्वयं अध्ययन

अपने राज्य की सुरक्षा व सुव्यवस्था बनाए रखने के लिए कौन-से विभाग कार्य करते हैं ? लिखो और बताओ ।

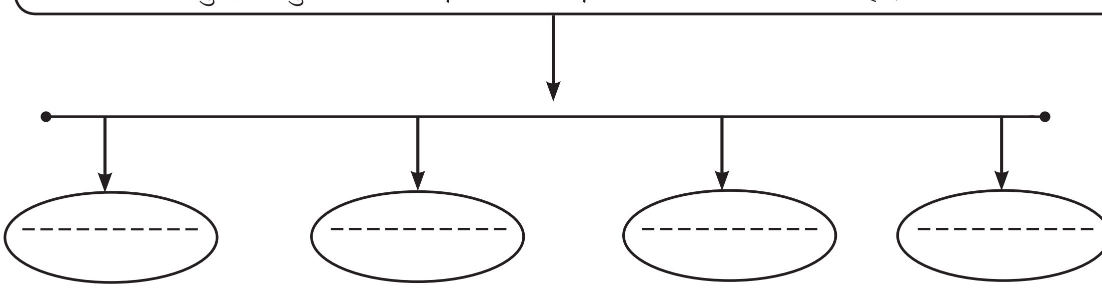

वाचन जगत से

किसी एक प्रयाणगीत का वाचन करो । गुट बनाकर शालेय समारोह में सुनाओ ।

खोजबीन

अब तक के भारत के प्रधानमंत्रियों के क्रमशः नाम और कार्यकाल की जानकारी ढूँढ़ो और चार्ट बनाओ ।

अध्ययन कौशल

पढ़े हुए किसी निबंध का सारांश अपने शब्दों में लिखो ।

* कविता के आधार पर भारत की विशेषताएँ लिखो ।

सदैव ध्यान में रखो

देशहित के प्रति सदैव जागरूक, कर्मनिष्ठ रहो ।

भाषा की ओर

संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया के सभी प्रकारों के वाक्य बनाकर लिखो और कोष्ठक में प्रकार लिखो :

संज्ञा के भेद	मयूरी	(१) मयूरी दौड़ती है ।	(व्यक्तिवाचक)
	लड़की	(२) ----------------------	(----------)
	थकान	(३) ----------------------	(----------)
	पानी	(४) ----------------------	(----------)
	दर्शकगण	(५) ----------------------	(----------)
सर्वनाम के भेद	वह	(१) वह पाठशाला जाती है ।	(पुरुषवाचक)
	कोई	(२) ----------------------	(----------)
	वही	(३) ----------------------	(----------)
	क्या	(४) ----------------------	(----------)
	स्वयं ही	(५) ----------------------	(----------)
विशेषण के भेद	मीटर	(१) साड़ी लगभग पाँच मीटर लंबी है ।	(परिमाणवाचक)
	कुशल	(२) ----------------------	(----------)
	ये	(३) ----------------------	(----------)
	पाँच	(४) ----------------------	(----------)
	यह	(५) ----------------------	(----------)
क्रिया के भेद	तैरती है	(१) मोहिनी तैरती है ।	(अकर्मक)
	कूद पड़ी	(२) ----------------------	(----------)
	सिखाना	(३) ----------------------	(----------)
	सिखवाना	(४) ----------------------	(----------)
	खाता	(५) ----------------------	(----------)

अभ्यास-१

१. प्रत्येक ऐप्स के प्रयोग एवं उपयोग की प्रक्रिया सुनो और समझो ।

२. दैनिक व्यवहारों में इन ऐप्स का प्रयोग कब और कैसे करोगे, यह बताओ ।

३. इसी प्रकार के अन्य उपयोगी ऐप्स की जानकारी ढूँढ़ो और पढ़ो ।

४. चित्रों का निरीक्षण करो । इनसे संबंधी अतिरिक्त जानकारी प्राप्त करो और लिखो :

[मान्यता प्राप्त ऐप्स का ही प्रयोग करो । नियमों की जानकारी प्राप्त करके ही ऐप्स डाऊनलोड करो ।]

SEARCH

NOTE

EMAIL

NIRBHAYA
Be Fearless©

BHIM
BHARAT INTERFACE FOR MONEY

eRail.in

५. सम्मोच्चारित हिंदी शब्द समझो और लिखो तथा उनसे सार्थक वाक्य बनाओ ।

समूह — दल — पर्णदल

( ) — चोटी — ( )

( ) — चंदा — ( )

( ) — पर — ( )

( ) — पद — ( )

( ) — अलंकार — ( )

----

* पुनरावर्तन – १ *

१. किसी एक वर्ण के सभी मात्राओंवाले शब्द सुनाओ । जैसे– म–मन, मा–मामा ....

२. पुण्यश्लोक आहिल्याबाई होळकर का कार्य बताओ । (इतिहास और नागरिक शास्त्र सातवीं कक्षा पृष्ठ ५३)

३. 'सच्चाई, ईमानदारी, परिश्रम' पर घोषवाक्य बनाकर पढ़ो ।

४. पाँच कवियों के मूलनाम और उपनाम लिखो ।

५. शब्द पहेली में स्वतंत्रता सेनानियों के नाम ढूढ़ो और लिखो :

द	चं	जा	द्र	र	ख	शे	आ	
स	सु	बो	द्र	स	बा	चं		
द	त	श	ग	भ	ही	ह	सिं	
के	त	ड़	ब	फ	ल	वं		
र	ह	र	फ	ब	ह	ज	दु	शा

कृति

दादी/नानी से जन्म पर गाए जाने वाले गीत (सोहर) सुनो ।

पिछली कक्षा में कौन–कौन–से उपक्रम किए थे, बताओ ।

उपक्रम

प्रति सप्ताह पाँच सुवचनों का वाचन करो ।

प्रकल्प

अपनी पसंद के किसी विषय पर एकल या गुट में प्रकल्प तैयार करो ।

● निरीक्षण करते हुए चर्चा करो :

१. कृषि प्रयोगशाला

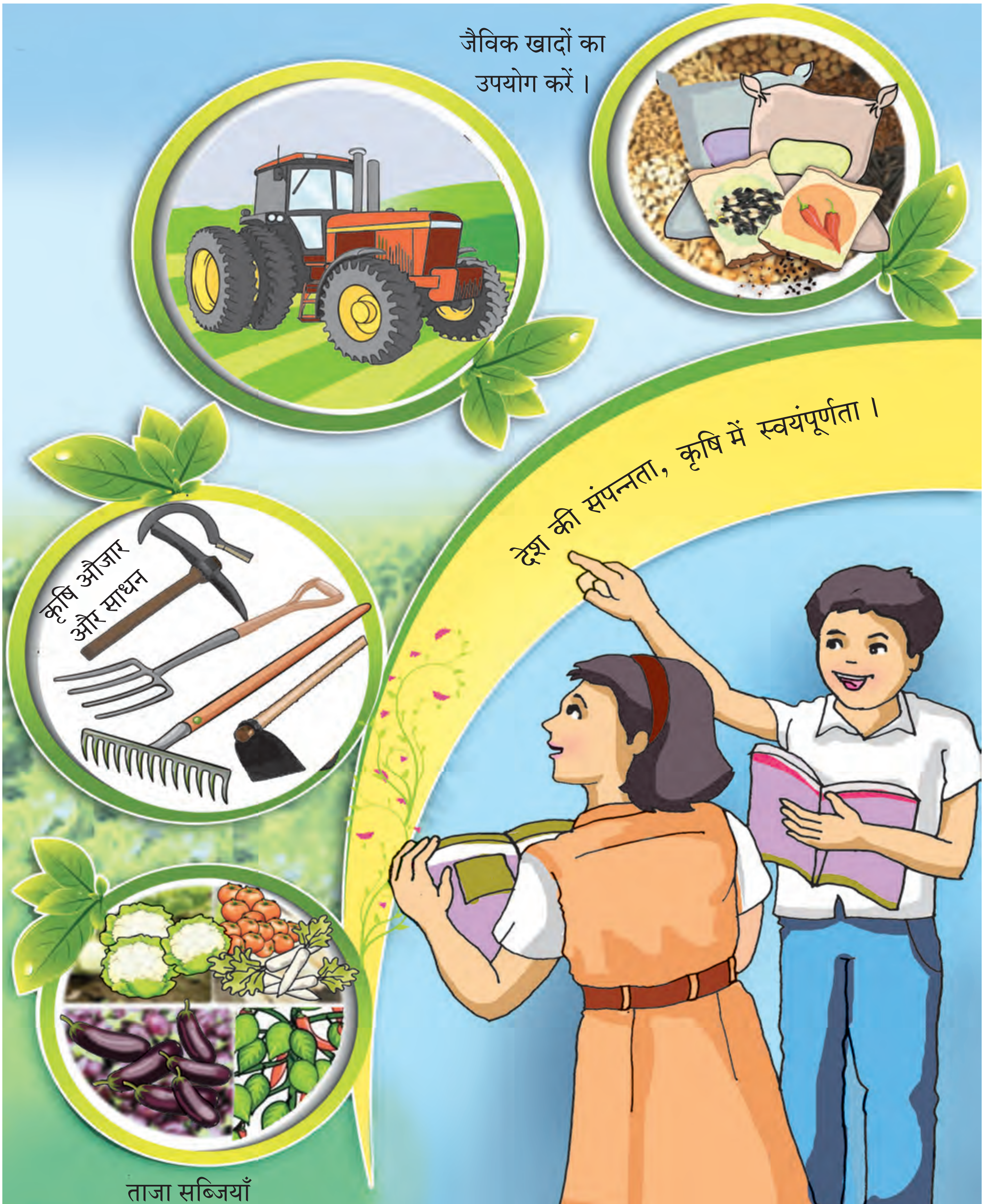

❑ भारत में कृषि के क्षेत्र में हो रहे नए-नए प्रयोग बताएँ । विद्‌यार्थियों को अंतरजाल से इससे संबंधित जानकारी प्राप्त करने हेतु कहें । चित्र में दिखाई देने वाली वस्तुएँ, वाक्यों के संदर्भ में चर्चा कराके उनके महत्त्व और कार्य आदि के बारे में पूछें ।

● **पढ़ो और गाओ :**

२. मधुऋतु

–आनंद विश्वास

जन्म : जुलाई १९४९ शिकोहाबाद (उ.प्र.) **रचनाएँ :** मिटने वाली रात नहीं, पर कटी पाँखे, देवम, गरमागरम थपेड़े लू के, चिड़िया फुर्र
परिचय : आनंद विश्वास जी अंधविश्वास और मुश्किलों के बोझ से दबे जीवन के प्रति विद्रोही स्वर रखने वाले कवि हैं ।
प्रस्तुत कविता में कवि ने वसंत ऋतु में पृथ्वी पर होने वाले विविध परिवर्तनों का सजीव शब्दों में वर्णन किया है ।

सुनो तो जरा

यू ट्यूब/ऑडियो पर कोई कविता सुनो और आरोह-अवरोह के साथ सुनाओ ।

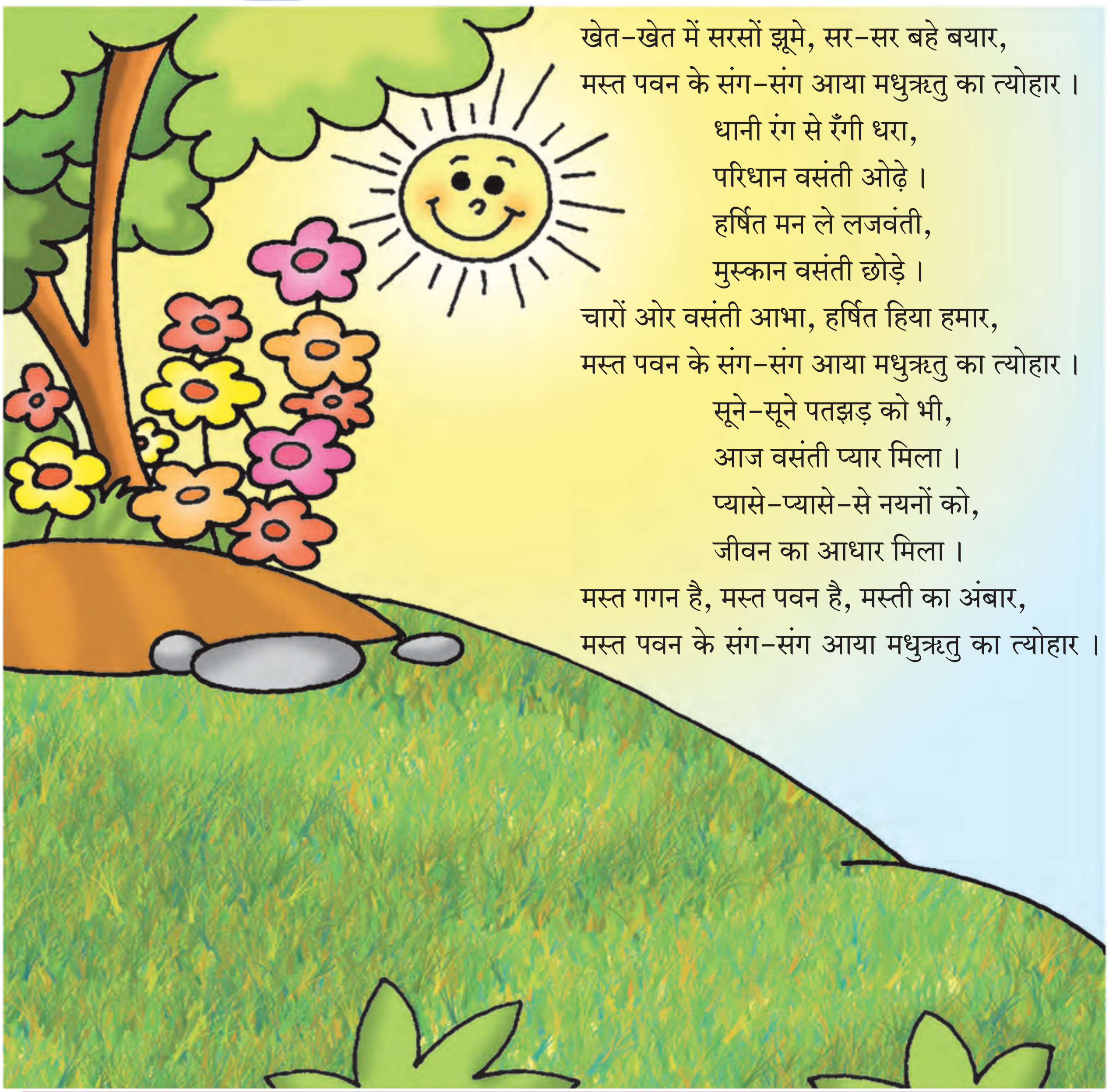

खेत-खेत में सरसों झूमे, सर-सर बहे बयार,
मस्त पवन के संग-संग आया मधुऋतु का त्योहार ।
धानी रंग से रँगी धरा,
परिधान वसंती ओढ़े ।
हर्षित मन ले लजवंती,
मुस्कान वसंती छोड़े ।
चारों ओर वसंती आभा, हर्षित हिया हमार,
मस्त पवन के संग-संग आया मधुऋतु का त्योहार ।
सूने-सूने पतझड़ को भी,
आज वसंती प्यार मिला ।
प्यासे-प्यासे-से नयनों को,
जीवन का आधार मिला ।
मस्त गगन है, मस्त पवन है, मस्ती का अंबार,
मस्त पवन के संग-संग आया मधुऋतु का त्योहार ।

❑ हाव-भाव, लय-ताल के साथ कविता का आदर्श पाठ करें । विद्यार्थियों से गुट में, एकल साभिनय कविता पाठ कराएँ । कविता में आए भावों को प्रश्नोत्तर के माध्यम से स्पष्ट करें । 'पृथ्वी' विषय पर आधारित अन्य कविता पढ़ने के लिए कहें ।

बताओ तो सही

अपने पसंदीदा मौसम से संबंधित चर्चा करो :

- मौसम का नाम
- कालावधि
- प्रकृति पर प्रभाव
- खान-पान के पदार्थ

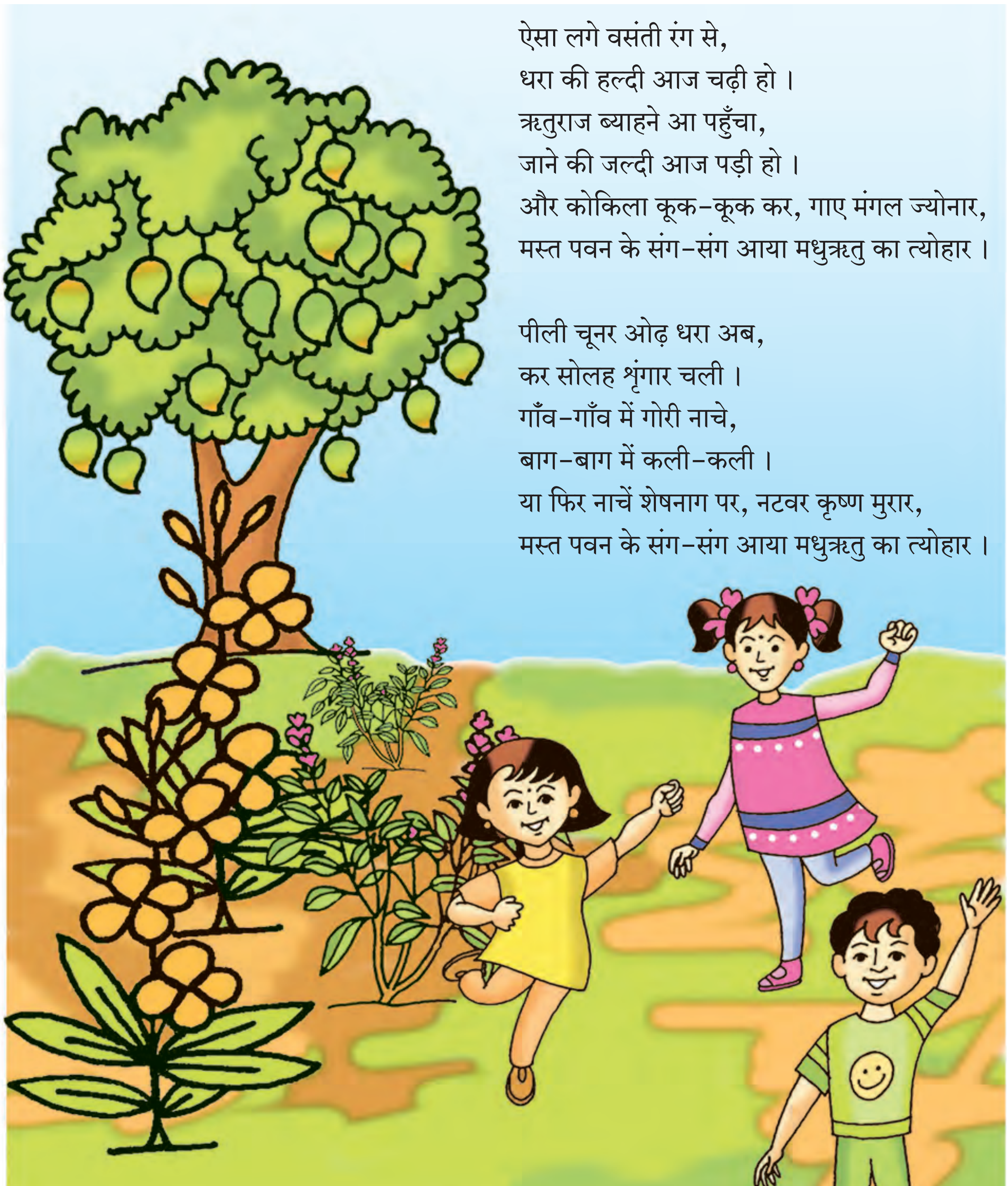

ऐसा लगे वसंती रंग से,
धरा की हल्दी आज चढ़ी हो ।
ऋतुराज ब्याहने आ पहुँचा,
जाने की जल्दी आज पड़ी हो ।
और कोकिला कूक-कूक कर, गाए मंगल ज्योनार,
मस्त पवन के संग-संग आया मधुऋतु का त्योहार ।

पीली चूनर ओढ़ धरा अब,
कर सोलह श्रृंगार चली ।
गाँव-गाँव में गोरी नाचे,
बाग-बाग में कली-कली ।
या फिर नाचें शेषनाग पर, नटवर कृष्ण मुरार,
मस्त पवन के संग-संग आया मधुऋतु का त्योहार ।

❑ मौसम और ऋतुओं पर चर्चा करें । प्रत्येक मौसम और ऋतुओं के महीनों के नाम लिखवाएँ । वसंत ऋतु के समय प्रकृति में होने वाले परिवर्तनों पर चर्चा कराएँ । वसंत ऋतु पर बारह से पंद्रह वाक्य/निबंध लिखने के लिए प्रेरित करें ।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

मधुऋतु = वसंत ऋतु
धरा = पृथ्वी
परिधान = वस्त्र
अंबार = ढेर
हर्षित = प्रसन्न
हिया = हृदय
ऋतुराज = वसंत
मंगल = शुभ
ज्योनार = विवाह में भोजन के समय गाया जाने वाला गीत

जरा सोचो ..... चर्चा करो

यदि ऋतु परिवर्तन ना हो तो ....

विचार मंथन

।। सुंदरतम यह देश हमारा ।।

खोजबीन

दोहे लिखने वाले कवियों के नाम ढूँढ़ो और सूची बनाओ ।

अध्ययन कौशल

गणतंत्र दिवस पर वक्तृत्व के लिए टिप्पणी बनाओ :

- कब से प्रारंभ
- मनाने की विधि
- हमारा कर्तव्य

स्वयं अध्ययन

स्वातंत्र्यवीर सावरकर जी का 'जयोस्तुते' गीत चार्ट पर लिखो और समारोह में सुनाओ ।

वाचन जगत से

स्वामी विवेकानंद जी का कोई भाषण पढ़ो और मुख्य विचार लिखो ।

मेरी कलम से

दूरदर्शन पर देखे किसी 'कार्टून कथांश' का वर्णन अपने शब्दों में लिखो ।

✲ कविता के किसी एक चरण का अर्थ अपने शब्दों में लिखो ।

सदैव ध्यान में रखो

ऋतुएँ, प्रकृति और मानव के लिए वरदान होती हैं ।

भाषा की ओर

शब्दों के अर्थ शब्दकोश की सहायता से ढूँढ़ो तथा रिक्त गोलों में उचित शब्द लिखो :

✲ पत्तों की सरसराहट सुनकर हिरन देखते-ही-देखते ---------- हो गया ।

(पलायन, ओझल, विलुप्त)

✲ हमें साक्षात्कार लेने के लिए आपकी ---------- चाहिए ।

(अनुमति, विनती, आदेश)

✲ भरी सभा में अध्यक्ष जी की बात का सभी ने ---------- किया ।

(स्वीकृत, अनुमोदन, मान्यता)

✲ हर माँ के लिए उसकी संतान ---------- रत्न होती है ।

(अनमोल, बहुमूल्य, कीमती)

✲ भारतीय संस्कृति हमारी ---------- है ।

(अमानत, पूँजी, धरोहर)

✲ आजकल हर व्यक्ति भौतिक सुख-सुविधाओं का ---------- लेना चाहता है ।

(उपभोग, उपयोग, प्रयोग)

✲ अच्छे विचारों की ---------- रखने वाला व्यक्ति सबसे धनी होता है ।

(संपन्नता, अमीरी, ऐश्वर्य)

✲ बछड़ा अपनी माँ से मिलने के लिए ---------- हुआ जा रहा था ।

(बीमार, बेचैन, आकुल)

● सुनो, समझो और सुनाओ :

३. काकी

– *सियारामशरण गुप्त*

जन्म : १८९५ चिरगाँव(उ.प्र.) **मृत्यु :** १९६३, **रचनाएँ :** मौर्य-विजय, बापू, अमृत पुत्र **(काव्यकृतियाँ)** गोद, अंतिम आकांक्षा, नारी **(उपन्यास)**, मानुषी **(कहानी संग्रह)** **परिचय :** आपका वैयक्तिक तथा साहित्यिक रूप गांधीवादी विचारधारा से प्रभावित रहा है ।

प्रस्तुत मनोवैज्ञानिक कहानी में कथाकार ने अबोध बालक के जीवन की करुण घटना एवं बालसुलभ कल्पना को साकार किया है ।

विचार मंथन

।। स्वामी तिन्हीं जगाचा, आईविना भिकारी ।।

विचार मंथन की कृति करवाने के लिए आवश्यक सोपान :

- विद्‌यार्थियों से 'माँ' के बारे में चर्चा कराएँ ।
- किसी दिन माँ के घर में न होने पर उनके अनुभव कहलवाएँ ।
- माँ की महानता से संबंधित सुवचन बताने के लिए कहें ।

उस दिन बड़े सबेरे जब श्यामू की नींद खुली तब उसने देखा, घरभर में कुहराम मचा हुआ है । उसकी काकी उमा नीचे से ऊपर तक एक कपड़ा ओढ़े हुए कंबल पर भूमि शयन कर रही है और घर के सब लोग उसे घेरकर बड़े करुण स्वर में विलाप कर रहे हैं ।

लोग जब उमा को श्मशान ले जाने के लिए उठाने लगे, तब श्यामू ने बड़ा उपद्रव मचाया । लोगों के हाथों से छूटकर वह माँ के ऊपर जा गिरा । बोला, ''काकी सो रही है । इसे इस तरह उठाकर कहाँ लिए जा रहे हो ? मैं इसे न ले जाने दूँगा ।'' वह अपनी माँ को काकी कहा करता था । लोगों ने बड़ी कठिनाई से उसे हटाया । काकी के अग्नि संस्कार में भी वह न जा सका । एक दासी राम-राम करके उसे घर पर ही सँभाले रही ।

यद्‌यपि बुद्‌धिमान गुरुजनों ने उसे विश्वास दिलाया कि उसकी काकी उसके मामा के यहाँ गई है परंतु असत्य के वातावरण में सत्य बहुत समय तक छिपा न रह सका । आसपास के अबोध बालकों के मुँह से ही वह प्रकट हो गया । यह बात उससे छिपी न रह सकी कि काकी और कहीं नहीं ऊपर राम के यहाँ गई है । काकी के लिए कई दिन लगातार रोते-रोते उसका रुदन तो

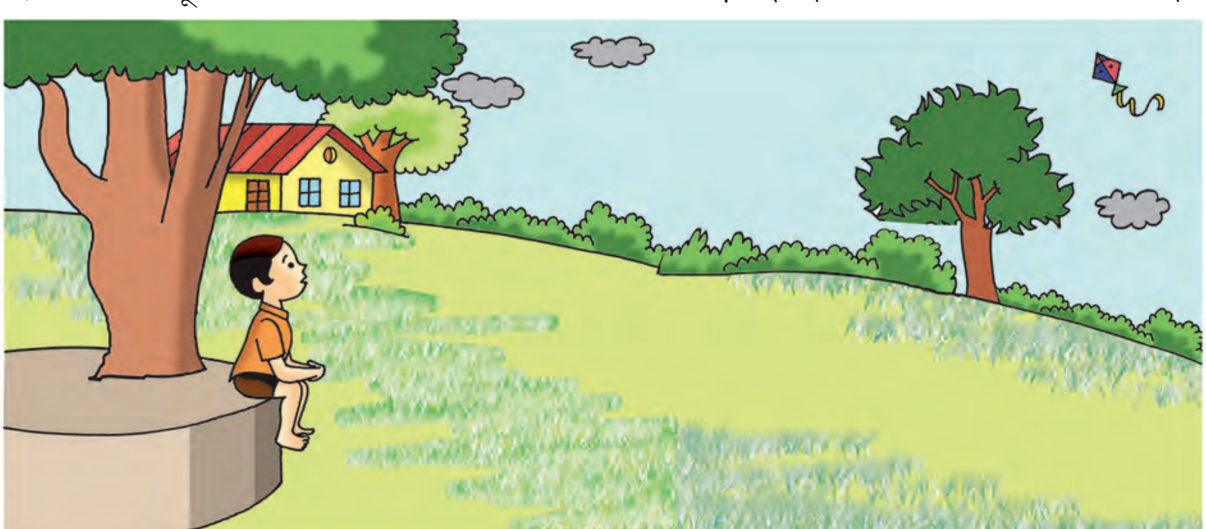

❑ किसी एक परिच्छेद का उचित आरोह-अवरोह के साथ वाचन करें । आदर्श मुखर वाचन कराएँ । कहानी का मौन वाचन कराके कहानी के आशय पर चर्चा करें । माँ, चाची, दादी और नानी के लिए वे क्या-क्या करते हैं, उनसे कहलवाएँ ।

वाचन जगत से

प्रेमचंद द्‌वारा लिखित 'बूढ़ी काकी' पढ़ो तथा उसका सारांश सुनाओ ।

धीरे-धीरे शांत हो गया परंतु शोक शांत न हो सका । वर्षा के अनंतर एक ही, दो दिन में पृथ्वी के ऊपर का पानी अगोचर हो जाता है; परंतु भीतर उसकी आर्द्रता जैसे बहुत दिन तक बनी रहती है, वैसे ही उसके अंतस्तल में शोक जाकर बस गया था । वह प्रायः अकेला बैठा-बैठा शून्य मन से आकाश की ओर ताका करता ।

एक दिन उसने ऊपर एक पतंग उड़ती देखी । न जाने क्या सोचकर उसका हृदय एकदम खिल उठा । पिता के पास जाकर बोला, ''काका, मुझे एक पतंग मँगा दो । अभी मँगा दो ।''

पत्नी की मृत्यु के बाद से विश्वेश्वर बहुत अनमने से रहते थे । ''अच्छा, मँगा दूँगा,'' कहकर वे उदास भाव से और कहीं चले गए ।

श्यामू पतंग के लिए बहुत उत्कंठित था । वह अपनी इच्छा किसी तरह न रोक सका । एक जगह खूँटी पर विश्वेश्वर का कोट टँगा था । श्यामू ने इधर-इधर देखकर उसके पास एक स्टूल सरकाकर रखा और ऊपर चढ़कर कोट की जेबें टटोलीं, एक चवन्नी पाकर वह तुरंत वहाँ से भाग गया ।

सुखिया का लड़का भोला, श्यामू का समवयस्क साथी था । श्यामू ने उसे चवन्नी देकर कहा, ''अपनी जीजी से कहकर चुपचाप एक पतंग और डोर मँगा दो । देखो, खूब अकेले में लाना, कोई जान न पाए ।''

पतंग आई । एक अँधेरे घर में उसमें डोर बाँधी जाने लगी । श्यामू ने धीरे से कहा, ''भोला, किसी से न कहो तो एक बात कहूँ ।''

भोला ने सिर हिलाकर कहा, ''नहीं, किसी से न कहूँगा ।''

श्यामू ने रहस्य खोला, कहा- ''मैं यह पतंग ऊपर राम के यहाँ भेजूँगा । उसको पकड़कर काकी नीचे उतरेगी । मैं लिखना नहीं जानता, नहीं तो इसपर उसका नाम लिख देता ।''

भोला श्यामू से अधिक समझदार था । उसने कहा, ''बात तो तुमने बड़ी अच्छी सोची परंतु एक कठिनाई है । यह डोर पतली है । इसे पकड़कर काकी उतर नहीं सकती । इसके टूट जाने का डर है । पतंग में मोटी रस्सी हो तो सब ठीक हो जाए ।''

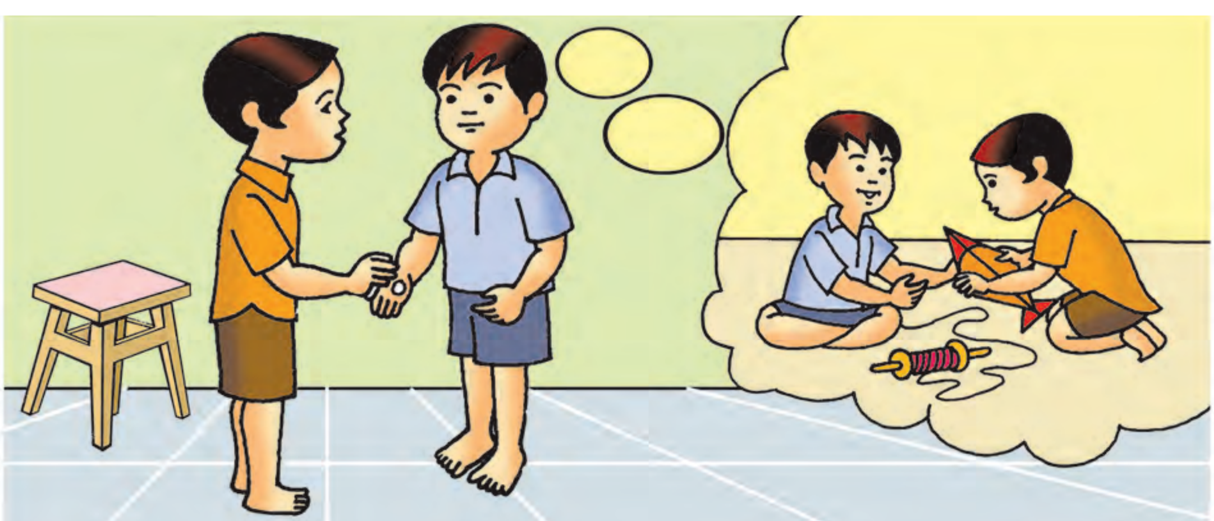

❑ विशेष वर्णों का उच्चारण करवाएँ और उनके उच्चारण पर ध्यान दें । कहानी में से मात्रावाले शब्द खोजवाकर लिखवाएँ और उनमें से कुछ शब्दों का वाक्य में प्रयोग करवाएँ । यह कहानी उन्हें अपने शब्दों में कहने के लिए प्रेरित करें ।

स्वयं अध्ययन

'पतंगोत्सव' संबंधी जानकारी प्राप्त करो और बताओ :

- कब
- कारण
- पतंगों के प्रकार
- व्यंजन

श्यामू गंभीर हो गया । मतलब यह बात लाख रुपये की सुझाई गई, परंतु कठिनाई यह थी कि मोटी रस्सी कैसे मँगाई जाए । पास में दाम नहीं और घर के जो आदमी उसकी काकी को बिना दया-मया के जला आए हैं, वे उसे इस काम के लिए कुछ देंगे नहीं । उस दिन श्यामू को चिंता के मारे बड़ी रात तक नींद नहीं आई ।

पहले दिन की ही तरकीब से दूसरे दिन फिर उसने पिता के कोट से एक रुपया निकाला । उसे ले जाकर भोला को दिया और बोला, ''देख भोला, किसी को मालूम न होने पाए । अच्छी-अच्छी दो रस्सियाँ मँगा दे । एक रस्सी छोटी पड़ेगी । जवाहिर भैया से मैं एक कागज पर 'काकी' लिखवा लूँगा । नाम लिखा रहेगा तो पतंग ठीक उन्हीं के पास पहुँच जाएगी ।''

दो घंटे बाद प्रफुल्ल मन से श्यामू और भोला अँधेरी कोठरी में बैठे हुए पतंग में रस्सी बाँध रहे थे । अकस्मात उग्र रूप धारण किए विश्वेश्वर शुभ कार्य में विघ्न की तरह वहाँ आ घुसे । दोनों को धमकाकर वे बोले, ''तुमने हमारे कोट से रुपया निकाला है ?''

भोला सकपकाकर एक ही डाँट में मुखबिर हो गया । वह बोला, ''श्यामू भैया ने रस्सी और पतंग मँगाने के लिए निकाला था ।''

विश्वेश्वर ने श्यामू को दो तमाचे जड़कर कहा, ''चोरी सीखकर जेल जाएगा ? अच्छा, तुझे आज अच्छी तरह समझाता हूँ ।'' कहकर फिर कई तमाचे जड़े और कान मलने के बाद पतंग फाड़ डाली । अब रस्सियों की ओर देखकर उन्होंने पूछा, ''ये किसने मँगाई ?''

भोला ने कहा, ''इन्होंने मँगाई थी । ये कहते थे, इससे पतंग तानकर काकी को राम के यहाँ से नीचे उतारेंगे ।''

विश्वेश्वर हतबुद्धि होकर वहीं खड़े रह गए । उन्होंने फटी हुई पतंग उठाकर देखी । उसपर चिपके हुए कागज पर लिखा था ... 'काकी' ।

❑ कागज पर 'काकी' लिखा देखकर विश्वेश्वर के मन में कौन-कौन-से भाव/विचार आए होंगे, विद्यार्थियों को बताने के लिए कहें । कहानी के अंतिम प्रसंग का कक्षा में विविध गुट बनाकर नाट्यीकरण कराएँ । अन्य कहानी कहलवाएँ ।

मैंने समझा

जरा सोचो ..... चर्चा करो

यदि सच में पतंग 'काकी' तक पहुँच गई होती तो ...

शब्द वाटिका

नए शब्द

कुहराम = कोलाहल
प्रफुल्ल = प्रसन्न
विलाप = रोना
अकस्मात = एकाएक
अगोचर = अदृश्य
सकपकाकर = डरकर
मुखबिर = खबर देने वाला जासूस

मुहावरा

हतबुद्धि होना = कुछ समझ में न आना

सुनो तो जरा

भ्रमणध्वनि के नंबर डायल करने के बाद व्यस्त होने पर सुनाई देने वाली उद्घोषणाएँ सुनो और सुनाओ ।

खोजबीन

भारत में मनाए जाने वाले किन्हीं दो त्योहारों की जानकारी प्राप्त करो और निम्न मुद्दों के आधार पर लिखो :

- राज्य
- कब और विधि
- वैज्ञानिक कारण
- अन्य राज्यों से तुलना

मेरी कलम से

किसी पसंदीदा विषय पर आकर्षक विज्ञापन बनाओ :

- सामग्री
- विषय
- संदेश

अध्ययन कौशल

'डेंगू, मलेरिया' संबंधी टेलीफिल्म देखो और इनसे बचने के लिए आवश्यक सावधानियाँ लिखो ।

सदैव ध्यान में रखो

माँ वात्सल्य का सागर होती है ।

✲ कहानी के इन पात्रों का आपस में रिश्ता लिखो :

रिश्ता

- जवाहर और श्यामू ______
- सुखिया और भोला ______
- श्यामू और भोला ______
- विश्वेश्वर और श्यामू ______
- श्यामू और उमा ______
- विश्वेश्वर और उमा ______

भाषा की ओर

नीचे दिए वाक्य पढ़ो और प्रत्येक वाक्य से ऐसे दो शब्द ढूँढ़कर लिखो; जो एक-दूसरे के विरुद्धार्थी हैं । कॉपी में इसी प्रकार के अन्य वाक्य बनाओ :

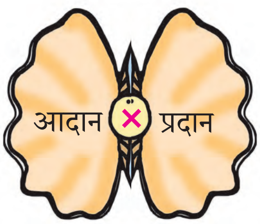

१. भाषा विचारों के आदान-प्रदान का प्रभावी साधन है ।

२. हमेशा सज्जनों की संगति में रहें और दुर्जनों से दूर ।

३. विज्ञान का सही उपयोग वरदान है अन्यथा वह अभिशाप है ।

४. आज विश्व को अशांति की नहीं शांति की आवश्यकता है ।

५.बगीचे में चारों तरफ फूलों की इतनी सुगंध है कि वहाँ दुर्गंध का नामोनिशान नहीं ।

६. निरर्थक शब्द विचारों को स्पष्ट नहीं करते, सार्थक शब्द ही करते हैं

७. यदि प्रशंसा नहीं कर सकते हैं तो कम-से-कम निंदा तो न करें ।

८. गाँव जाना अभी तो अनिश्चित है; निश्चित हो जाने पर बताएँगे ।

९. अच्छे संस्कार बच्चों को अवनति से बचाकर उन्नति की ओर ले जाते हैं ।

१०. उचित और अनुचित का चुनाव स्वयं को ही करना चाहिए ।

● **सुनो, समझो और सुनाओ :**

४. संदेश

–पुष्पा अशोककुमार दुबे

जन्म : १ जुलाई १९६० मुंबई (महाराष्ट्र) **परिचय :** समसामयिक विषयों एवं विद्यालयीन गतिविधियों में विशेष अभिरुचि । आप राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त प्रधानाध्यापिका हैं । नए-नए उपक्रमों में सहभागिता निभाने वाली समस्त विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा स्रोत हैं ।

प्रस्तुत संवाद के माध्यम से लेखिका ने पत्रों के प्रकारों पर प्रकाश डाला है ।

जरा सोचो ..... चर्चा करो

अगर दूरध्वनि एवं भ्रमनध्वनि न होते तो ......

गुरु जी : **(कक्षा में प्रवेश करते ही)** नए वर्ष की शुभकामनाएँ, बच्चो ! तुम सबका नया साल सुखमय और आनंदमय हो । सभी यशस्वी हो ।

सभी विद्यार्थी : धन्यवाद गुरु जी । आपको भी नए वर्ष की बहुत-बहुत बधाई ।

गुरु जी : अच्छा यह बताओ कि नए वर्ष के उपलक्ष्य में तुम्हें किसी का पत्र मिला क्या ? **(सभी एक दूसरे का मुँह देखने लगते हैं । खुसर-फुसर करने लगते हैं ।)**

उज्ज्वल : गुरु जी, मेरे भाई को नियुक्ति पत्र आया था । उसे रेलवे में नौकरी मिल गई है । बधाई का तो नहीं देखा ।

प्रवर : गुरु जी, मेरे पिता जी को पत्र द्‌वारा पदोन्नति की सूचना प्राप्त हुई । उनका प्रमोशन हो गया है ।

सुव्रता : अरे वाह ! उज्ज्वल की तो चाँदी हो गई । गुरु जी ! उसे कहिए कि वह हम सब को पार्टी दे । **(उज्ज्वल झुककर सुव्रता को अँगूठा दिखाता है ।)**

मुक्ता : गुरु जी मेरी मौसी के लड़के की शादी का निमंत्रण पत्र आया है ।

गुरु जी : शाबाश बच्चो ! तुम सबने देखा कि प्रवर के घर पदोन्नति पत्र, उज्ज्वल के यहाँ नियुक्ति का पत्र और मुक्ता की मौसी के लड़के की शादी का निमंत्रण पत्र आया है । क्या तुम जानते हो कि पत्र कितने प्रकार के होते हैं ?

मुक्ता : गुरु जी निमंत्रण पत्र, नियुक्ति पत्र, पदोन्नति पत्र ।

गुरु जी : शाबाश ! इन पत्रों के बारे में तो हम अभी-अभी चर्चा कर ही रहे थे ।

उज्ज्वल : गुरु जी, वही सुनकर तो यह नकलची फटाफट बता दी ।

गुरु जी : प्रवर ! बहुत बुरी बात । ऐसा नहीं बोलते । तुम क्यों नहीं बोले ? चलो ! मुक्ता से क्षमा माँगो ।

उज्ज्वल : सॉरी मुक्ता ! मुझे क्षमा कर दो ।

मुक्ता : जाओ मैंने तुम्हें माफ किया ।

अध्ययन : गुरु जी, आप ही बताएँ । हमारे ध्यान में तो नहीं आ रहा है ।

गुरु जी : सोचो-सोचो । **(कुछ बच्चे सर खुजलाने लगते हैं । कुछ सिर नीचे कर लेते हैं ।)**

गुरु जी : प्रवर, तुम्हारे भाई को नियुक्ति पत्र मिला है । पत्र मिलने के पहले उसने कुछ तो किया होगा ?

अध्ययन : प्रार्थना पत्र दिया होगा ।

गुरु जी : शाबाश ! तुम्हारी बुद्‌धि चलने लगी है । **(सभी विद्यार्थी हँस पड़ते हैं ।)**

❑ विद्यार्थियों से संवाद का वाचन कराएँ । कक्षा में संवाद का नाट्यीकरण कराएँ । पत्रों के प्रकारों एवं उनकी विषय वस्तु पर चर्चा कराएँ । पत्र लेखन के प्रारूप पर चर्चा करें । विद्यार्थियों को आवश्यकतानुसार पत्र लेखन के लिए प्रेरित करें ।

सुनो तो जरा

दक्खिनी हिंदी की कोई कविता सुनो और सुनाओ ।

गुरु जी : रत्ना ! खड़ी हो जाओ । क्या बात है ? क्या सोच रही हो ?

रत्ना : गुरु जी ! मैं सोच रही थी कि पाँचवीं कक्षा में हम लोगों ने 'शुभकामना कार्ड' बनाना सीखा था । मैंने मुक्ता को दीपावली पर बधाई पत्र भेजा था । वह भी तो एक प्रकार हुआ न ?

गुरु जी : बिलकुल सही रत्ना । शाबाश ! तुम्हारी स्मरण शक्ति बहुत अच्छी है । शाबाश ! शाबाश !

अरुण : गुरु जी ! मेरी मम्मी बताती हैं कि जब टेलीफोन/मोबाइल नहीं थे तो उस समय हाल-चाल लेने के लिए चिट्ठी लिखते थे ।

गुरु जी : हाँ ! पहले कुशल-क्षेम पूछने के लिए पत्र व्यवहार ही प्रमुख साधन था ।

सौम्या : गुरु जी मेरे भाई ने अपने लिए बहुत सी पुस्तकें वी.पी.से मँगाई थी । उसमें एक पुस्तक फटी हुई थी । अब उसे क्या करना चाहिए ?

गुरु जी : सौम्या, अपने भाई से कहो कि वह प्रकाशक को शिकायती पत्र लिखे और पूरी जानकारी दे ।

प्रवर : गुरु जी, इस तरह तो यह व्यवसाय संबंधी काम हो गया ।

गुरु जी : वाह प्रवर ! तुम इस प्रश्न से हमें पत्र के प्रकार के संकलन की तरफ ले आए हो ? ऐसे पत्र जिसमें व्यापारिक बातें, वस्तु/माल की आपूर्ति, इनसे संबंधी शिकायती बातें हों उन्हें व्यावसायिक पत्र कहा जाता है ।

अध्ययन : गुरु जी, वे कुशल-क्षेम वाले पत्र क्या हैं ?

गुरु जी : बच्चो ! ऐसे पत्र जिसमें पारिवारिक बातें, हाल-चाल, शुभकामना, संदेश देने आदि की बातें होती हैं, ऐसे पत्र व्यक्तिगत पत्र कहे जाते हैं ।

मुक्ता : गुरु जी ! फिर तो निमंत्रण पत्र भी एक प्रकार हुआ न !

गुरु जी : हाँ ! जन्मदिन, विवाह, शुभकार्य आदि के लिए जब हम अपने मित्रों-संबंधियों को पत्र देकर बुलाते हैं तो इसे निमंत्रण पत्र कहा जाता है ।

प्रवर : गुरु जी ! मेरे भाई ने प्रार्थना पत्र भेजा था । उसका कौन-सा प्रकार हुआ ?

गुरु जी : अधिकारी, प्रशासक, संस्थाप्रधान आदि से जब हम कोई पत्राचार करते हैं तो उसे आवेदन पत्र कहते हैं ।

सौम्या : गुरु जी ! और कोई शेष है क्या ? कोई छूट तो नहीं गया ?

गुरु जी : हाँ सौम्या । राज्यशासन, केंद्रीय शासन के शासकीय, कार्यालयीन पत्रों को सरकारी पत्र कहते हैं । अच्छा, अब बताओ हमने कितने प्रकार के पत्रों के बारे जानकारी प्राप्त की ?

सभी एक साथः व्यक्तिगत पत्र, निमंत्रण पत्र, आवेदन पत्र, सरकारी पत्र, व्यावसायिक पत्र ।

गुरु जी : शाबाश ! लेकिन अब इन पत्रों के नए रूप भी आ गए हैं । इन नए पत्रों के नाम कौन बताएगा ? **(सब सोचने लगते है । कोई उत्तर नहीं देता । सब शांत हो जाते हैं ।)**

गुरु जी : अरे भाई ! एस. एम. एस., ई-मेल, फैक्स तो हम अक्सर ही करते हैं । चलो, आज हमने सब पत्रों के प्रकार जानें । अब तुम भी पत्रों के प्रारूप और इसके अंगों के बारे में जानकारी संकलित करना । अगली बार हम इसकी जानकारी पढ़ेंगे । **(सभी बच्चे एक साथ- धन्यवाद गुरु जी)**

- विविध प्रकार के पत्रों एवं महापुरुषों के पत्र पढ़ने एवं उनके संग्रह करने के लिए प्रेरित करें । डाक विभाग से कौन-कौन-से पत्र आते हैं, पूछें । पत्र लेखन की परंपरा समाप्त हो रही है, कारणों पर चर्चा करें । 'कुरियर सेवा' समझाएँ ।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

प्रमोशन = पदोन्नति

नकलची = नकल करने वाला

मुहावरे

चाँदी होना = बड़ा लाभ होना

अँगूठा दिखाना = चिढ़ाना

स्वयं अध्ययन

अपने मुख्याध्यापक/मुख्याध्यापिका को छुट्टी के लिए प्रार्थना पत्र लिखो ।

वाचन जगत से

अंतरजाल/पुस्तक से भारतीय डाक सेवा का इतिहास ज्ञात करो :

- पुरातन सेवाएँ
- विकास
- आधुनिक सेवाएँ

अध्ययन कौशल

भारत के औद्योगिक मानचित्र से ज्ञात करो कि वस्त्रोद्योग की मिलें कहाँ-कहाँ हैं, सूची बनाओ :

- राज्य
- वस्त्रों के प्रकार
- निर्यात

विचार मंथन

पत्र बोलते हैं, भावों के मर्म खोलते हैं ।

बताओ तो सही

सुवचन, उद्धरणों का संकलन करो और संबंधित आशय बताओ ।

मेरी कलम से

किसी पसंदीदा विषय पर आकर्षक विज्ञापन तैयार करो ।

खोजबीन

प्राचीन काल से वर्तमान समय तक के संदेश वाहकों के नाम ढूँढ़ो और बताओ ।

✻ **पाठ के आधार पर शब्द पहेली से पत्र के प्रकार ढूँढ़ो और लिखो :**

व्य	पा	नि	आ	ई	मे
व्या	क्ति	रि	मं	वे	ल
व	यि	ग	त्र	फै	द
सा	क	ण	त	क्स	न

= .... = ...
= .... = ...
= .... = ...
= .... = ...
= .... = ...

सदैव ध्यान में रखो

महापुरुषों द्वारा लिखे गए पत्र हमारी साहित्यिक धरोहर हैं ।

भाषा की ओर

दिए गए हिंदी-मराठी समोच्चारित भिन्नार्थक शब्दों के अर्थ लिखो और दोनों शब्दों का वाक्य में प्रयोग करके लिखो तथा इसी तरह के अन्य शब्द ढूँढ़ो ।

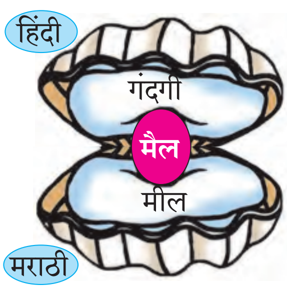

१. ---------------
----
२. ---------------
----

१. ---------------
----
२. ---------------
----

१. ---------------
----
२. ---------------
----

१. ---------------
----
२. ---------------
----

१. ---------------
----
२. ---------------
----

१. ---------------
----
२. ---------------
----

१. ---------------
----
२. ---------------
----

१. ---------------
----
२. ---------------

● **पढ़ो और समझो :**

५. आलस का सुख

प्रस्तुत निबंध में लेखक ने हास्य-व्यंग्य के माध्यम से सामाजिक विकृतियों पर कुठाराघात किया है ।

जरा सोचो ..... चर्चा करो

यदि तुम बिना कुछ किए दो दिन बैठे रहे तो ...

जरा सोचो तो की कृति करवाने के लिए आवश्यक सोपान :

- विद्यार्थियों से उनकी दिनचर्या संबंधी प्रश्न पूछें ।
- बिना कुछ किए दिन कैसे व्यतीत होगा, चर्चा कराएँ ।
- 'आलस्य मानव प्रगति में बाधक है' विषय पर विचार प्रकट करने के लिए कहें ।
- वे आलसी या कृतिशील बनेंगे ? क्यों ? बताने का अवसर दें ।

प्राचीन काल से ही लोग परिश्रम को महत्त्व देते रहे हैं । परिश्रमी और सफल लोगों का सम्मान करते हैं । वे कभी आलसी लोगों पर विशेष ध्यान ही नहीं देते हैं । समाज में आलस को सामाजिक और व्यक्तिगत बुराई माना जाता रहा है । ''जो सोवत हैं, वो खोवत हैं जो जागत हैं, सो पावत हैं'' जैसी कहावतों के माध्यम से आलसी लोगों को धमकाने और ''आलसस्य कुतो विद्या'' जैसे श्लोकों के जरिए उनको सामाजिक रूप से जलील करने/ताने कसने के प्रयास अनंतकाल से जारी हैं फिर भी उनके कान पर जूँ तक नहीं रेंगती । ये आलसी सर्वव्यापी हैं । वे आप को पूर्व-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण सब जगह मिल जाएँगे ।

अपने संचार माध्यमों के चैनलों को ही देख लीजिए । आज तक (चैनल नहीं) आलस और आलसियों का वजूद 'सेट मैक्स चैनल' पर 'सूर्यवंशम फिल्म' की तरह जस का तस बना हुआ है, जो ये दर्शाता है कि बुराई का विरोध करने से वो ज्यादा बढ़ती है । इसीलिए बुराइयों को कोसें नहीं बल्कि प्यार से पालें-पोसें और बड़ा होने पर उनके हाथ पीले और लाल करके घर से विदा कर दें । पुनः वापस न आने दें ।

दरअसल हर युग में अवतरित हुए जरूरत से ज्यादा लेकिन आवश्यकता से कम 'श्याणे-लोग' इस बात को समझने में नाकाम रहे हैं कि आलस कोई दुर्गुण नहीं है बल्कि ये तो दुनियादारी और मोहमाया से मुँह मोड़ लेने का एक आसान आध्यात्मिक तरीका है जिसमें व्यक्ति बिना किसी को तकलीफ दिए, 'बिना किसी गिव या टेक' के, सारे प्रलोभनों को 'ओवरटेक' करके, 'सिक्स लेन' वाले 'मोक्ष मार्ग' पर बिना कोई टोल टैक्स दिए अपनी गाड़ी और कल्पनाओं के घोड़े दौड़ा सकता है । न हींग लगे न फिटकरी, सब रंग चोखा ही चोखा । जिस दिन जालिम दुनिया ये समझ लेगी उसी दिन से सारी समस्याएँ बेईमानों की ईमानदारी की तरह छू मंतर हो जाएँगी । लेकिन ऐसा लगता है कि न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी ।

आलसी लोगों को चाहे कोई कितना भी भला-बुरा क्यों ना कहे लेकिन वे उसका कभी बुरा नहीं

❑ इस व्यंग्य के किसी एक परिच्छेद का आदर्श वाचन करें । विद्यार्थियों से एकल, समूह में मुखर एवं मौन वाचन कराएँ । प्रश्नोत्तर एवं चर्चा के माध्यम से इस व्यंग्य में आए विचारों को स्पष्ट करें । विद्यार्थियों से एकल, समूह में मुखर एवं मौन वाचन कराएँ ।

मानते। वे बहुत ही समझदार और भले लोग हैं । वे जानते हैं कि बुरा मानने के बाद गुस्सा उपजता है जो कि झगड़े और कलह (और कलह से सुलह का रास्ता काफी दुर्गम होता है) को जन्म देता है । लोग एक-दूसरे का मुँह देखना पसंद नहीं करते । जिससे रिश्तों में दरार आने की संभावना रहती है और इस दरार को रोकने के लिए वो 'खंबुजा-सीमेंट' की तरह काम करती है । टीवी विज्ञापनों में कई सीमेंट में जान बताई जाती है । कुछ लोग कितने नासमझ होते हैं । वे विज्ञापनों पर भरोसा कर लेते हैं । उन्हें ऐसे सारे विज्ञापनों के खिलाफ ज्ञापन देने की जरूरत है क्योंकि दरअसल 'जान' किसी सीमेंट में नहीं होती है बल्कि आलसी लोगों में होती है क्योंकि संबंधों के लिए वे अपना 'अहम' त्याग देते हैं लेकिन अपना आलस त्याग देंगे ऐसा 'वहम' किसी कीमत पर नहीं उपजने देते हैं । वैसे आजकल बहुत से लोग सयाने हो गए हैं । विज्ञापन

देखते हैं और भूल जाते हैं । विज्ञापनों पर विश्वास नहीं करते । सुनते सबकी हैं, करते अपने मन की हैं ।

आज के भौतिकतावादी युग में सामाजिक मूल्यों को बनाए रखने में आलसी महापुरुष अपनी महती भूमिका निभा रहे हैं । जहाँ अधिकतर लोग सफलता मिलने के बाद बदल जाते हैं और इवन-डे पर अपनी मँहगी कार में और ओड-डे पर अपने अभिमान पर सवारी करने लगते हैं वहीं आलसी लोगों से सभ्य समाज को ऐसा कोई खतरा नहीं हैं । काम और सफलता इन दो शब्दों से आलसी लोगों का वही संबंध होता है जो कि 'लाल-किला बासमती चावल' से लाल किले का है । लेखक और प्रकाशक की 'संयुक्त-गलती' से 'काम और सफलता' जैसे शब्द आलसियों की डिक्शनरी में होते तो हैं लेकिन उन्हें देखते ही वो पन्ना पलट देते हैं ताकि उनकी किस्मत का पासा न पलट पाए और वो आलस के अलावा किसी अभिमान या स्वाभिमान का शिकार न हो पाएँ ।

यहाँ पर ये 'अस्पष्ट' कर देना जरूरी है कि आलसी लोग किसी भी कार्य या मेहनत से नहीं घबराते हैं । वे भला बिस्तर से नहीं घबराते, पड़े-पड़े खाने से नहीं घबराते, टीवी. पर कार्यक्रम, पिक्चर देखने से नहीं घबराते तो कार्य से क्या घबराएँगे । उनको केवल इस बात का डर सताता है कि उनके काम करने से कहीं 'सोने' के भाव कम ना हो जाए । ये लोग इतने दयालु और परहित स्वभाव के होते हैं कि हर क्षेत्र में बढ़ती हुई 'गला-काट' प्रतिस्पर्धा को कम करने के उद्देश्य से काम ही नहीं करते हैं । न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी । जब वे मैदान में उतरेंगे ही नहीं तो स्पर्धा किससे करेंगे।

- इस पाठ में आलस्य के साथ-साथ किन-किन पर व्यंग्य किया गया है, सूची बनवाएँ । इस सूची के किन-किन मुद्दों से विद्यार्थी सहमत/असहमत हैं, पूछें । विद्यार्थियों को कोई व्यंग्य चित्र बनाने के लिए प्रेरित करें । अन्य व्यंग्य लेख पढ़ने के लिए कहें ।

वाचन जगत से

कोई हास्य घटना पढ़ो और उसपर आधारित संवाद बनाकर प्रस्तुत करो ।

वस्तुतः वे लोग चाहते हैं कि 'काबिल' लोगों को मौका मिले और वे सफल होकर 'ड्यू डेट' से पहले अपने सभी 'बिल' भर सकें । इसके बदले इनको किसी सम्मान की आशा नहीं होती बल्कि ये तो केवल इतना ही चाहते हैं कि काबिल लोग अपनी सफलता का शोर मचा कर इनकी नींद खराब न करें । काबिल लोग जो करते हैं उसके खिलाफ लोग तो कभी आवाज नहीं उठाते फिर आलसी लोगों को ये क्यों बदनाम करते हैं । इसके अलावा आलसी लोगों पर कभी अपेक्षाओं और उम्मीदों पर खरा ना उतर पाने का आरोप नहीं लगता क्योंकि सपने में भी इनसे कोई उम्मीद या अपेक्षा नहीं रखी जाती । ये कभी किसी का दिल भी नहीं तोड़ते क्योंकि इन्हें दिन-रात खटिया तोड़ने से ही फुर्सत नहीं मिलती । वे इस दुनियादारी से कोई मतलब ही नहीं रखते उन्हें किसी से क्या लेना देना । बस अपने काम से काम । खाना-पीना, पड़े रहना बस ! वे दुनिया के झंझटों में नहीं पड़ना चाहते । यहाँ आकर वे गांधीजी के बंदर बन जाते हैं । इन बंदरों का अपना अर्थ लगा लेते हैं । वे न कुछ देखते हैं, न सुनते हैं और न ही बोलते हैं ।

वैसे वे किसी से डरते नहीं । आलसी लोग बिना दब के, कब के, समाज के हर तबके में अपनी पैठ सियाचिन की बर्फ की तरह जमा चुके हैं । मैंने पहले ही कहा है कि ये सर्वव्यापी हैं । ये आलसी यत्र-तत्र--सर्वत्र मिल जाएँगे । एक खोजो हजार मिलेंगे । तुम्हें फिल्में बहुत प्रिय हैं न । अब तुम अपनी फिल्मों को ही देख लो । कुछ फिल्म निर्देशक तो इतने आलसी होते हैं कि फिल्म कि स्क्रिप्ट करने में ही तीन-चार साल निकाल देते हैं । वैसे ये डायरेक्टर्स हिम्मत करके थोड़ा आलस और दिखाएँ तो सरकारें पंचवर्षीय योजनाएँ बनाने और क्रियान्वित करने में भी इनकी मदद ले सकती हैं ताकि कर्मचारी, अधिकारी अपने ऑफिस के वातानुकूलित कार्यालयों में थोड़ा आराम कर सकें । उन्हें दौरों पर न जाना पड़े । वैसे उन्हें केवल अकाल और बाढ़ के ही दौरे अधिक पसंद हैं । सामान्य दौरों के खयाल से ही उन्हें दौरा पड़ने लगता है ।

अब तुम्ही सोचो कि ये आलसी कितने महत्त्वपूर्ण होते हैं । यदि ये महत्त्वपूर्ण न होते तो भला उनपर इतना लंबा लेख लिखनें की आवश्यकता क्यों पड़ती ? तुम भी इतने मग्न होकर उनके बारे में क्यों पढ़ते ? सच बताना, तुम्हें ये आलसी लोग पसंद आ रहे हैं न ! क्या कहा, हाँ या न ? चलो छोड़ो । जाने दो इन आलसियों को । अब अपने दूसरे भी काम करो । कितना समय दे रहे हो इनको । जरा अपना कान मेरे पास लाओ । एक राज की बात बतानी है । राज की बात यह है कि 'तुम कभी आलसी मत बनना ।'

❑ विकारी शब्दों के भेदों पर चर्चा करें । पाठ में आए विकारी शब्दों की सूची बनवाएँ, वर्गीकरण कराएँ । प्रत्येक का अलग-अलग वाक्य बनाकर बताने के लिए कहें । संज्ञा, सर्वनामों में कारक लगने के पश्चात उनके जो रूप बनते हैं, उन्हें ध्यानपूर्वक समझने के लिए कहें ।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

स्वयं अध्ययन

नियोजन बनाओ और उसपर अमल करो :
'शिक्षक दिवस'/ 'विश्व हिंदी दिवस'

- कार्य विभाजन
- कार्यक्रम

नए शब्द

वजूद = अस्तित्व

वहम = गलत सोच, शक

जालिम = जुल्म करने वाला

काबिल = योग्य

तबके = वर्ग

मुहावरे

जलील करना = अपमानित करना

ताना कसना = व्यंग्य मारना

कान पर जूँ तक न रेंगना = कुछ भी प्रभाव न पड़ना

कहावत

न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी = न बड़ा प्रबंध होगा न बड़ा कार्य होगा ।

सुनो तो जरा

नाट्यांश सुनो और सांस्कृतिक कार्यक्रम में प्रस्तुत करो ।

बताओ तो सही

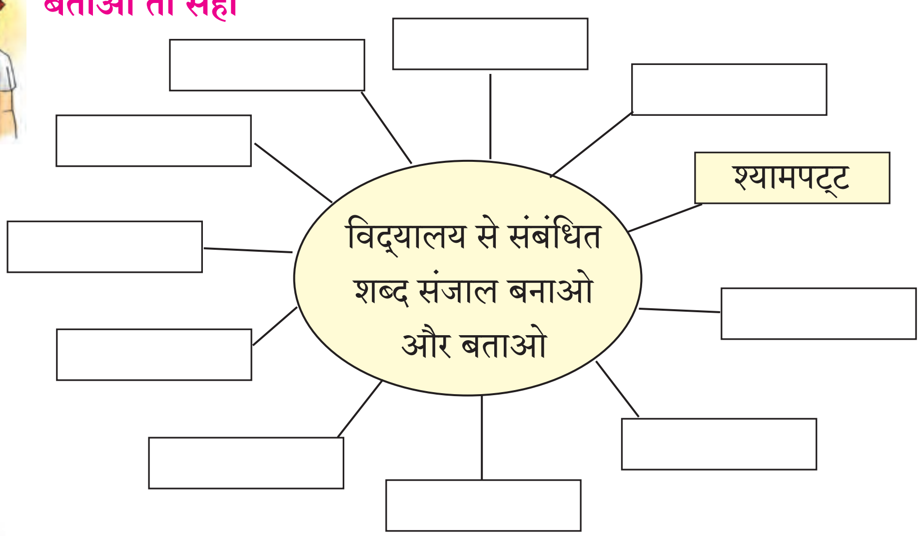

मेरी कलम से

अपने विद्‌यालय के वार्षिकोत्सव की निमंत्रण पत्रिका तैयार करो ।

खोजबीन

अंतरजाल से खोजकर व्यंग्य चित्रकारों के नामों का चार्ट तैयार करो ।

अध्ययन कौशल

किसी शालेय प्रतियोगिता का सूचना पत्र बनाओ ।

※ **पाठ के आधार पर आलसी व्यक्ति की विशेषताएँ लिखो ।**

सदैव ध्यान में रखो

आलस मनुष्य की प्रगति में बाधक है ।

भाषा की ओर

सूचना के अनुसार दिए गए अविकारी शब्दों की सहायता से वाक्य बनाकर उनके नाम लिखो :

अविकारी शब्द	निर्देश	वाक्य	प्रकार
धीरे-धीरे	[पुल्लिंग ए. व.]	रमेश धीरे-धीरे चलता है ।	क्रियाविशेषण अव्यय
आहिस्ता-आहिस्ता	[स्त्रीलिंग ए. व.]		
कारण	[स्त्रीलिंग ए. व.]		
परंतु	[पुल्लिंग ए. व.]		
अरे रे !	[स्त्रीलिंग ए. व.]		
अलावा	[पुल्लिंग ए. व.]		
और	[स्त्रीलिंग ए. व.]		
भली-भाँति	[पुल्लिंग ए. व.]		
वाह !	[स्त्रीलिंग ए. व.]		

* पढ़ो और गाओ :

६. अक्लमंदी

यहाँ हास्य के माध्यम से कवि ने प्रकृति में जो जिस रूप में है, उसी रूप में स्वीकार करने के लिए प्रेरित किया है ।

किसी गाँव मिट्ठू नामक, एक मियाँ जी रहते थे ।
बात-बात में खुद को, खूब अक्लमंद कहते थे ।।
बात दुरुस्त न लगे किसी की, आता काम पसंद नहीं ।
नाक चढ़ाकर हिज्जेबाजी, करते रहते जहाँ-कहीं ।।
एक दिवस ससुराल पहुँचने, की उसने मन में ठानी ।
कपड़े पहन, उठाकर थैला, फिर सिर पर छतरी तानी ।।
तेज धूप में चलते-चलते तन से स्वेद लगा झरने ।
फाड़-फाड़ कर आँखें मिट्ठू, वृक्ष तलाश लगा करने ।।
पाकर सुंदर वृक्ष आम का, वह आनंद विभोर हुआ ।
उसकी ठंडी छाया में बस, खूब मजे से लेट गया ।।
हरा-भरा खेत पास में, लहर-लहर लहराता था ।
देख-देख वह शोभा उसकी, फूला नहीं समाता था ।।
बड़े-बड़े तरबूज खेत में, देख-देख वह ललचाया ।
कुछ मीठे तरबूज वहाँ से, तुरंत तोड़कर ले आया ।।
खाकर के तरबूज मियाँ ने, ऊपर को जब देखा तो ।
मीठे-मीठे और रसीले, आम लगे थे ऊपर को ।।

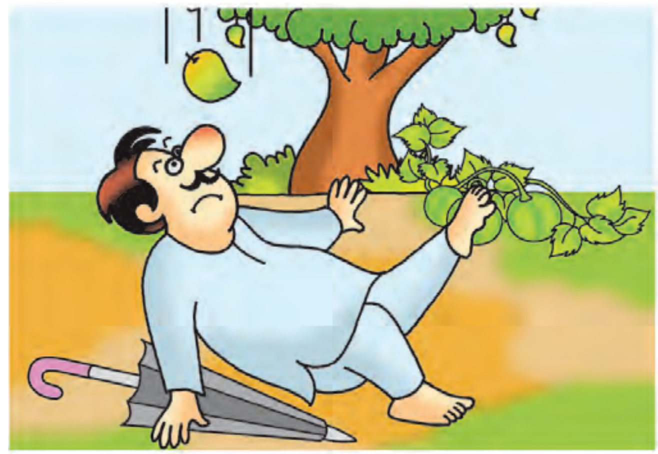

आम तोड़ने चढ़ा गिर पड़ा, लिए तुड़ा घुटने-टखने ।
हाथ न आते देख आम, तब त्योरी तान लगा बकने-
''खुदा बड़ा ही बेवकूफ है, कैसे उसको समझाऊँ ?
अगर कहीं मिल जाए मुझको, तो कच्चा ही खा जाऊँ ।।
देखो, बेवकूफ ने बेलों पर तरबूज लगाए हैं?
कितने छोटे आम, दरख्तों पर ऊँचे लटकाए हैं ।।
अगर खुदा मैं होता तो, सब गलती देता दूर भगा ।
पेड़ों पर तरबूज व बेलों पर चट देता आम लगा ।।''
देता रहा खुदा को गाली, आया मन में खेद नहीं ।
ठंडी हवा चली मिट्ठू को, निधड़क आई नींद वहीं ।।
उसी समय ऊपर से, एक आम अचानक टूट गिरा ।
टूटी नाक मियाँ मिट्ठू की, खून बह निकला बहुतेरा ।।
ऐसी हालत में मिट्ठू से दरद न झेला जाता था ।
फूट-फूट कर रोता था, औ नाक, नाक चिल्लाता था ।।
आँसू और खून की उसके, मुख पर धार लगी बहने ।
हाथ जोड़ फिर रोता-रोता, होकर खड़ा लगा कहने-
''खुदा, बड़े तुम अक्लमंद हो, मुझे लगा है आज पता ।
नहीं बुराई कभी करूँगा, कर दो मेरी माफ खता ।।
अगर आम के बदले ऊपर, ये तरबूज लगे होते ।
मेरा निकल कचूमर जाता, घरवाले किसको रोते ?''

❑ उचित हाव-भाव, लय-ताल के साथ कविता का पाठ करें । विद्यार्थियों से सामूहिक, गुट एवं एकल साभिनय पाठ करवाएँ । अन्य हास्य कविता कक्षा में सुनाने के लिए प्रेरित करें । चुटकुलों एवं हास्यगीतों का संग्रह करवाएँ । कक्षा में पहेलियाँ बुझवाएँ ।

● **पढ़ो और समझो :**

७. साक्षात्कार

– डॉ. हरिकृष्ण देवसरे

जन्म : ३ मार्च १९४० **मृत्यु :** १४ नवंबर २०१३ **रचनाएँ :** डाकू का बेटा, भगतसिंह, उड़ती तश्तरियाँ, स्वानयात्रा, गिरना स्काइलैब का आदि **परिचय :** हिंदी के बालसाहित्यकार और संपादक । कविता, कहानी, नाटक, आलोचना आदि की २५० पुस्तकें प्रकाशित ।
इस पाठ में साक्षात्कार के माध्यम से अच्छी विज्ञान कथा की विशेषताओं को स्पष्ट किया गया है ।

बताओ तो सही

किसी व्यक्ति का साक्षात्कार लेने से पहले कौन-कौन-सी पूर्व तैयारी करनी पड़ेगी, बताओ ।

व्यक्ति का चयन | समय निश्चिती | मुद्दे | आवश्यक सामग्री

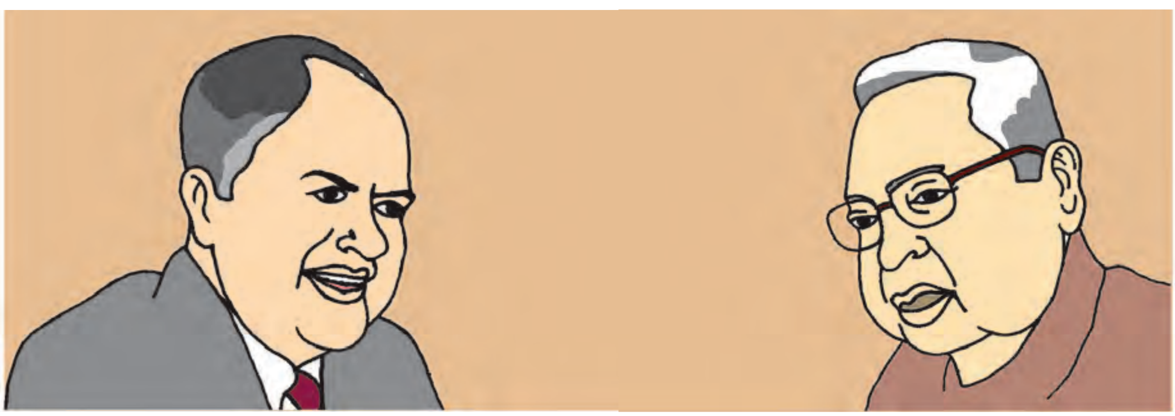

डॉ. देवसरे : डॉ. नारळीकर ! आपने बड़ी संख्या में विज्ञान कथाएँ लिखी हैं और उनमें से कई पर फिल्में भी बनी हैं तो हम अपनी चर्चा सीधे-सीधे इसी बात से शुरू करते हैं कि एक अच्छी विज्ञान कथा में कौन-कौन-सी विशेष बातें होनी चाहिए ?

डॉ. नारळीकर : मेरा मत यह है कि जिस उद्‌देश्य से विज्ञान कथा मैं लिखता हूँ, वह यह है कि जो पाठक हैं, उन्हें हम विज्ञान के बारे में कुछ बताएँ । कारण यह है कि आज पाठक विज्ञान को बहुत दूर की चीज समझता है, विज्ञान से डरता है, सोचता है कि ये मेरी समझ से परे है । पर उसे ऐसा लगना चाहिए कि विज्ञान हमारे जीवन का अंग बन चुका है । वह किस प्रकार हमारे जीवन को प्रभावित करता है, यह बात अगर हम उसे किसी वास्तविक कथा से बता सकें तो विज्ञान के बारे में उसे कुछ रुचि हो सकती है । इस विचार से विज्ञान के जो नियम हैं, उनको स्पष्ट करने वाले कुछ कथानक मैं चुनता हूँ, जिसका वास्तविक जीवन से संबंध हो सके । विज्ञान कथा के माध्यम से मैं वैज्ञानिक दृष्टिकोण का प्रसार करना चाहता हूँ । लेकिन मुझे लगता है कि हमारे देश में विज्ञान का लोकप्रियकरण एक प्रमुख बुनियादी आवश्यकता है । जब तक लोगों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण नहीं आता, हम भविष्य के भारत की कल्पना कैसे कर सकते हैं ? इसलिए विज्ञान प्रसारकों के सामने यह बड़ी चुनौती है कि विभिन्न माध्यमों से विज्ञान का प्रचार-प्रसार कैसे किया जाए ? मैं अपनी यही भूमिका विज्ञान कथाओं के माध्यम से पूरी करने के प्रयास में लगा हूँ ।

❑ किसी एक परिच्छेद का आदर्श वाचन करें । कुछ विद्‌यार्थियों से मुखर वाचन कराएँ । संपूर्ण पाठ का मौन वाचन करवाएँ । प्रश्नोत्तर एवं चर्चा के माध्यम से पाठ के प्रमुख मुद्‌दों पर चर्चा करें । डॉ. नारळीकर जी की विज्ञान कथाएँ पढ़ने के लिए प्रेरित करें ।

अध्ययन कौशल

किसी वैज्ञानिक की लघु जीवनी पढ़ो और टिप्पणी बनाओ ।

डॉ. देवसरे : विदेशों में विज्ञान कथाओं का विपुल साहित्य लिखा गया है, जैसे– उड़नतश्तरियों, दूसरे ग्रहों से आने वालों या दूसरे ग्रहों में जाने वालों को लेकर और इसी आधार पर तमाम विज्ञान सीरियल, विज्ञान फिल्में बन रही हैं । क्या ये कथाएँ हमें किसी प्रकार से वैज्ञानिक दृष्टिकोण नहीं देतीं ?

डॉ. नारळीकर : ऐसी कुछ कथाएँ अवश्य हैं जिसमें दूसरे ग्रहों से लोग आए या हमारे यहाँ के लोग दूसरे ग्रहों पर गए हैं, जैसे 'स्टार ट्रेक' धारावाहिक में हुआ या अन्य कुछ फिल्मों में । इनमें से कुछ में ही विज्ञान अच्छी तरह से यानी तर्कसंगत रूप से देखने को मिलता है, लेकिन ऐसे कथानक अधिकांश रूप से अपवाद ही हो सकते हैं, जैसे– एच.जी. वेल्स का 'वार ऑफ दि वर्ल्डस' । सामान्य रूप से जो कुछ हम देखते हैं, वे ऐसे नहीं होते और उनसे वैज्ञानिक दृष्टिकोण के निर्माण की आशा करना कठिन होता है । वे मनोरंजन कर सकती हैं, पर विज्ञान में आपकी रुचि नहीं जगा सकतीं ।

डॉ. देवसरे : अब यहीं पर सवाल उठता है कि विज्ञान तो सत्य पर आधारित होता है और कथा का आधार कल्पना होती है । तो किसी विज्ञान कथा में इन दोनों की मात्रा कितनी हो और इसमें कैसा तालमेल होना चाहिए ?

डॉ. नारळीकर : इस बारे में मैं कहना चाहूँगा कि जिस दृष्टिकोण से मैं लिखता हूँ उसमें कुछ फैंटसी का अंश आ सकता है । लेकिन वह भी इस प्रकार आता है–मान लीजिए, आज हम विज्ञान का एक रूप देख रहे हैं, वह भविष्य में कैसा होगा, इसके बारे में वैज्ञानिकों को कुछ कल्पनाएँ करनी चाहिए जिसे भविष्य की योजना बनाना कहते हैं, वह होनी चाहिए यानी आगे समाज किस मार्ग से जाए, इसके बारे में कुछ विचार–मंथन आज करना चाहिए । तो आज जो विज्ञान हम देखते हैं, उसके ऊपर उसका तर्क–विस्तार (एक्सस्ट्रापोलेट) करने, यानी आगे वह कैसा होगा, इस प्रकार की कल्पनाएँ की जाती हैं ।

डॉ. देवसरे : डॉ. नारळीकर ! प्रश्न यह है कि एच.सी. वेल्स या जूल्स वर्न उन कथाओं में ऐसी कल्पनाएँ कैसे कर सके कि वे कई सालों बाद सत्य निकलीं ?

डॉ. नारळीकर : कुछ लोग वे होते हैं, जिन्हें हम युगद्रष्टा या भविष्यद्रष्टा कहते हैं । हालाँकि ऐसे गिने–चुने लोगों में आगे का समाज किस मार्ग से जाएगा, विज्ञान किस मार्ग से जाएगा, इसको परखने–देखने की शक्ति होती है । जूल्स वर्न ने चंद्रमा पर जो लोग गए, उनका जो वर्णन किया है और बाद में जब अपोलो–२ यान वहाँ गया, तब जो वर्णन वास्तव में हमने चंद्रमा का पढ़ा उसमें काफी समानताएँ दिखाई देती हैं ।

डॉ. देवसरे : एक वैज्ञानिक यदि विज्ञान कथा लिखता है, तो निश्चित रूप से वह बहुत सशक्त होगी, लेकिन कोई अन्य लेखक यदि विज्ञान कथा लिखता है या लिखना चाहता है, तो उसकी विज्ञान में गहरी पकड़ होनी अनिवार्य है, तभी संभवतः वह एक अच्छी विज्ञान कथा की कल्पना कर पाएगा ?

❑ पाठ में आए वैज्ञानिक शब्दावली ढूँढ़कर उनपर चर्चा करवाएँ । पाठ में आए एकवचन, बहुवचन, पुल्लिंग–स्त्रीलिंग शब्दों की पहचान कराके सूची बनाने के लिए प्रेरित करें । इन शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करवाएँ । वाक्य में होने वाले परिवर्तन पर चर्चा कराएँ ।

जरा सोचो .....बताओ

अगर तुम्हें शालेय विज्ञान प्रदर्शनी का प्रमुख बनाया जाए तो... ।

डॉ. नारळीकर : देवसरे जी ! विज्ञान कथा के दो पहलू हैं । पहला यह कि विज्ञान का भाग अच्छा और सही होना चाहिए । लेकिन उसके साथ ही यदि आपका उद्‌देश्य यह है कि पाठक इसे मन लगाकर पढ़ें तो उसमें अच्छी कथा के जो साहित्यिक गुण होते हैं, वे होने चाहिए । इसलिए अच्छी विज्ञान कथा में विज्ञान और अच्छी कथा के गुणों का संगम होना चाहिए ।

डॉ. देवसरे : विश्व की विज्ञान कथाओं और उनके लेखकों में आप किसे श्रेष्ठ समझते हैं ?

डॉ. नारळीकर : विदेशी विज्ञान कथाओं में आर्थर सी. क्लार्क एक सशक्त कथाकार हैं । फ्रेड हॉयल मेरे गुरु हैं जिनसे मैंने पी एच. डी. की ट्रेनिंग ली, उनसे ही मैंने विज्ञान कथा लिखने की प्रेरणा पाई ।

डॉ. देवसरे : आपकी जो एक सशक्त विज्ञान कथा है 'अंतरिक्ष में विस्फोट', जिसको किशोरों ने बहुत पसंद किया और जिसका अनुवाद भी कई भाषाओं में हुआ है, उसमें आपने वही बात कही है जो इस चर्चा के आरंभ में आपने कही कि आप, लोगों को भविष्य की वह कल्पना देना चाहते हैं, जो संभवतः भविष्य में एक वैज्ञानिक सत्य के रूप में आ सकती है । इस कथा के बारे में आपका क्या विचार है ?

डॉ. नारळीकर : ऐसा हुआ था कि पहले मैंने इसे एक छोटी-सी कथा के रूप में मराठी में लिखा था । फिर मुझे लगा कि इसे किशोरों के लिए छोटे उपन्यास के रूप में बढ़ाया जा सकता है । इसी बीच दिल्ली से साहित्य अकादमी का पत्र आया कि आप हमारे लिए किशोर पाठकों के लिए कोई विज्ञान उपन्यास लिखें । तो मैंने यह उपन्यास लिखा । इसमें मैंने यह दिखाना चाहा है कि तारे में भी विस्फोट होता है । यह विस्फोट तारे की आयु में बहुत छोटा-सा क्षण माना जाता है, क्योंकि सूर्य जैसा तारा यदि दस से बारह अरब वर्ष जिएगा, तो उसके हिसाब से दो-तीन हजार वर्ष मानव के जीवनकाल में बहुत बड़ी अवधि होती है । इसीलिए मैंने सम्राट हर्षवर्धन के समय से तीन हजार वर्ष का कालखंड उसमें दिखाया है कि विस्फोट का प्रभाव कितना हो सकता है । हम लोग ऐसा समझते हैं कि हम इस पृथ्वी के स्वामी हैं, इसको कंट्रोल कर सकते हैं, जो कि गलत है । अंतरिक्ष के जिस वातावरण में हम रहते हैं उसमें यदि कोई खतरनाक चीज आ जाए तो हम लोग उसका मुकाबला नहीं कर पाएँगे ।

डॉ. देवसरे : आज भी पत्रिकाएँ और लोग मानते हैं कि बच्चों को परीकथाएँ, भूत-प्रेतों, चुड़ैलों आदि की कहानियाँ पढ़नी चाहिए तो विज्ञान कथाओं के संदर्भ में इनके बारे में आपका क्या विचार है ?

डॉ. नारळीकर : मैं यही कहूँगा कि जो बच्चे परीकथाएँ, भूत-प्रेतों की कहानियाँ आदि पढ़ते हैं, उनमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण जागृत होने में बाधा पड़ सकती है क्योंकि वे अंधविश्वासी अधिक बन सकते हैं । हमारे देश में अंधविश्वास ने अपनी जड़े कितनी गहरी जमा रखी है, यह वे लोग अधिक अच्छी तरह जानते हैं जो विज्ञान प्रसारक हैं । इसलिए मैं ऐसे बच्चों को सलाह दूँगा कि वे विज्ञान कथाएँ अवश्य पढ़ें । हम जब विज्ञान की नजर से कुछ पढ़ते हैं तो समझ में आ जाता है कि संभव क्या है, असंभव क्या है ? विज्ञान कथाएँ नई दृष्टि, सोच और भविष्य की सार्थक कल्पना देती हैं ।

❑ किसी महान विभूति का साक्षात्कार पढ़ने के लिए प्रेरित करें । साक्षात्कार के महत्त्व एवं इसकी विशेषता पर चर्चा करें । उनसे परिसर में रहने वाले किसी सैनिक, सामाजिक कार्यकर्ता के साक्षात्कार के लिए प्रश्न निर्मिति करवाकर साक्षात्कार लेने के लिए कहें ।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द
चुनौती = आह्वान
फैंटसी = कल्पना
पहलू = पक्ष, अंग
मुहावरा
समझ से परे होना = समझ में न आना

विचार मंथन

।। बिना परिश्रम न मिले मंजिल ।।

वाचन जगत से

डॉ. नारळीकर जी की कोई विज्ञानकथा पढ़ो और अपने मित्रों को बताओ ।

सुनो तो जरा

दूरदर्शन से प्रसारित होने वाला कोई साक्षात्कार सुनो और उसका महत्वपूर्ण अंश सुनाओ :

साक्षात्कार लेने वाले का नाम
साक्षात्कार देने वाले का नाम
विषय
महत्वपूर्ण बातें

मेरी कलम से

किन्हीं दस वैज्ञानिकों और उनके आविष्कारों के नामों की तालिका बनाओ ।

खोजबीन

अंतरजाल की सहायता से राज्यों के स्थापना दिवस ज्ञात करो और सूची बनाओ :
जैसे- महाराष्ट्र = १ मई, १९६० ई.

राज्य
दिनांक
वर्ष

स्वयं अध्ययन

प्राचीन काल तथा वर्तमान में प्रयुक्त वजन-मापों के नामों की तालिका बनाओ ।

✲ **उचित पर्याय को गोल बनाओ :**

(क) हमारे देश की बुनियादी आवश्यकता है ।

१. विज्ञान का लोकप्रियकरण २. विज्ञान का प्रयोग ३. वैज्ञानिक लेखन

(ख) डॉ. नारळीकर जी के गुरु; जिनसे उन्होंने पीएच. डी. की ट्रेनिंग ली ।

१. आर्थर सी. कार्ल्क २. ज्यूल्स वर्न ३. फ्रेड हॉयल

(ग) किशोरवयीन बच्चों द्वारा पसंद की हुई विज्ञान कथा ।

१. ब्लैक क्लाउड २. अंतरिक्ष में विस्फोट ३. उड़ती तश्तरियाँ

सदैव ध्यान में रखो

वाणी से संस्कार छलकते हैं ।

भाषा की ओर

निम्नलिखित में से तत्सम, तद्भव, देशी, विदेशी और संकर शब्द शब्दकोश की सहायता से छाँटकर लिखो :

पलंग, पेट, साग, खेत, मशीन, लॉटरी, पानी, घृत, तोप, छतरी, कार्य, लड़का, सायं, घी, गड़बड़, हस्त, आग, स्नान, इंजन,मिनट, शर्करा, प्रक्षालन, यूनिवर्सिटी, पवित्र, खिड़की, झाड़ू, ग्राम, रेडियो, कॉलेज, पाठशाला, पूँजीपति, घड़ीसाज, पगड़ी, रात, अंत, साइकिल, दीपक, गरीब, पार्टीबाजी, अखबार, ऊँट, स्टेशन, मूस, रेलगाड़ी ।

शब्दसंपदा

तत्सम	तद्भव	देशज	विदेशी	संकर
--------	--------	--------	--------	--------
--------	--------	--------	--------	--------
--------	--------	--------	--------	--------
--------	--------	--------	--------	--------
--------	--------	--------	--------	--------
--------	--------	--------	--------	--------
--------	--------	--------	--------	--------